Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

يَاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا
اسۡتَعِيۡنُوۡا بِالصَّبۡرِ وَالصَّلٰوةِ
اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيۡنَ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :149)

अनुवाद: हे वे लोगो! जो ईमान लाए हो (अल्लाह से) सब्र और नमाज़ के साथ सहायता मांगो। निस्संदेह अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّيۡ عَلٰى رَسُوۡلِهِ الۡكَرِيۡمِ وَعَلٰى عَبۡدِهِ الۡمَسِيۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 14-15

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

17-24 रजब 1439 हिजरी कमरी 12-5 शहादत 1397 हिजरी शमसी 5-12 अप्रैल 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

नमाज़ में यह दुआ ख़ुदा तआला ने सिखाई है और अनिवार्य कर दी है कि इसके बिना नमाज़ नहीं हो सकती कि غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ अर्थात ऐसा न हो कि हम مُنۡعَمۡ عَلَيۡهِ होने के बाद مَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ हो जाएँ अत: हमेशा ख़ुदा तआला की बेनियाज़ी से डरते रहना चाहिए

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

निशान 126- लुधियाना में एक सज्जन मीर अब्बास अली नाम थे जो बैत करने वालों में सम्मिलित थे। कुछ साल तक उन्होंने इखलास में ऐसी उन्नति की कि उनकी वर्तमान अवस्था के दृष्टिकोण से एक बार इल्हाम हुआ اَصۡلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرۡعُهَا فِی السَّمَآءِ इस इल्हाम से केवल इतना अभिप्राय था कि उस समय में वह आस्था में दृढ़ थे और ऐसे ही उन्होंने उस समय लक्षण प्रकट किए कि उनके लिए सिवाय मेरी चर्चा के और कोई काम न था और मेरे प्रत्येक पत्र को अत्यंत बाबरकत समझकर अपने हाथ से उसकी नकल करते थे और लोगों को उपदेश करते थे और अगर एक सूखा हुआ टुकड़ा भी दस्तरख्वान का हो तो उसे तबर्रुक समझकर खा जाते थे और सबसे पहले लुधियाना से वही क़ादियान में आए थे। एक बार मुझको ख़ुदा तआला की ओर से दिखाया गया कि अब्बास अली ठोकर खाएगा और विमुख हो जाएगा। वह मेरा पत्र भी उन्होंने मेरे मल्फ़ूज़ात में सम्मिलित कर लिया। इसके बाद जब उनकी भेंट हुई तो उन्होंने मुझको कहा कि मुझको इस कश्फ़ (तन्द्रावस्था) से जो मेरे बारे में हुआ है, बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि मैं तो आपके लिए मरने को तैयार हूं। मैंने उत्तर दिया कि जो कुछ आपके लिए मुकद्दर है वह पूरा होगा। इसके बाद जब वह समय आया कि मैंने मसीह मौऊद होने का दावा किया तो वह दावा उनको अनुचित लगा। पहले तो दिल ही दिल में परेशान होते रहे, उसके बाद उसको शास्त्रार्थ के समय जो मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब से लुधियाना में मेरी ओर से हुआ था और उस आयोजन से कुछ दिन उनको विरोधियों की संगत में रहने का अवसर मिल गया तो तक़दीर का लिखा हुआ प्रकट हो गया और वह स्पष्ट रूप से बिगड़ गए और फिर ऐसे बिगड़े कि जो दिल का विश्वास और जो मुख पर तेज था वह सब जाता रहा और मुर्तद होने की गुमराही प्रकट हो गई और मुर्तद होने के बाद एक दिन लुधियाना में पीर इफ्तेखार अहमद साहब के मकान पर मुझे मिले और कहने लगे कि आपका और हमारा इस प्रकार मुकाबला हो सकता है कि एक कमरे में हम दोनों बंद किए जाएं और 10 दिन तक बंद रहें फिर जो झूठा होगा मर जाएगा। मैंने कहा मीर साहिब ऐसी शरियत के विरुद्ध परीक्षाओं की क्या आवश्यकता है किसी नबी ने ख़ुदा की परीक्षा नहीं की मगर मुझे और आपको ख़ुदा देख रहा है वह सर्वशक्तिमान है वह स्वयं झूठे को सच्चे के समक्ष तबाह कर दे और ख़ुदा के निशान तो वर्षा के समान बरस रहे हैं अगर आप सच्चाई के इच्छुक हैं तो क़ादियान में मेरे साथ चलें, उत्तर दिया कि मेरी बीवी बीमार है मैं जा नहीं सकता और संभवता यह उत्तर दिया कि किसी जगह गई हुई है, याद नहीं रहा। मैंने कहा कि अब बस ख़ुदा के फैसले की प्रतीक्षा करो। फिर उसी साल उनकी मृत्यु हो गई और किसी कमरे में बंद किए जाने की आवश्यकता न रही। अत: यह भय का स्थान है कि आखिर अब्बास अली का क्या परिणाम हुआ और इतनी उन्नति के बाद एक ही क्षण में अवनति के गड्ढे में गिर गया और उसके हालात से यह अनुभव हुआ कि अगर किसी व्यक्ति के बारे में अच्छी खबर का भी इल्हाम हो तो कभी कभी अच्छाई भी किसी विशेष समय तक होती है★ अर्थात जब तक कोई अच्छाई के काम करे जैसा कि ख़ुदा तआला क़ुरआन शरीफ में काफिरों पर स्थान स्थान पर क्रोध प्रकट करता है और जब उन में से कोई मोमिन हो जाता है तो तत्काल वह क्रोध, दया से परिवर्तित हो जाता है और इसी प्रकार कभी दया, क्रोध से परिवर्तित हो जाती है। इसी कारण हदीस में आया है एक व्यक्ति जन्नत वालों के समान कर्म करता है यहां तक कि उसमें और जन्नत में एक बालिश्त का अंतर रह जाता है ओर वास्तव में तकदीर में वह जहन्नुमी होता है तो अंतत: कोई ऐसा कर्म या कोई ऐसी आस्था उससे घटित हो जाती है कि वह जहन्नुम में डाला जाता है। इसी प्रकार एक व्यक्ति जन्नती होता है और जहन्नुमियों के अमल करता है यहां तक कि उसमें और जहन्नुम में केवल एक बालिश्त का अंतर रह जाता है और अंतत: उसकी तकदीर ग़ालिब आ जाती है और फिर वह अच्छे काम करना आरंभ कर देता है और इसी पर उसकी मृत्यु हो जाती है और वह जन्नत में प्रवेश कर जाता है। और इस भविष्यवाणी की सच्चाई का यह सबूत है जिससे कोई विरोधी इंकार नहीं कर सकता कि वह किताब अमीर अब्बास अली की, जिसमें उसने अपने हाथ से मेरी यह भविष्यवाणी लिखी है जो पूरी हो गई, वह अब तक मौजूद है और मैंने उसकी मृत्यु के बाद उसको एक बार स्वप्न में देखा कि काले कपड़े पहने हुए है जो सर से पैर तक काले हैं और मुझसे लगभग सौ क़दम की दूरी पर खड़ा है और मुझसे सहायता के रूप में कुछ मांगता है। मैंने उत्तर दिया कि अब समय गुज़र गया अब हम में और तुम में बहुत दूरी है तू मुझ तक पहुंच नहीं सकता।

निशान-127- एक व्यक्ति सहजराम नामी अमृतसर की कमिश्नरी में सर रिश्तेदार था और पहले वह ज़िला सियालकोट में डिप्टी कमिश्नर साहब का रिश्तेदार था और वह मुझसे हमेशा धार्मिक शास्त्रार्थ किया करता था और इस्लाम धर्म से स्वाभाविक रूप से एक द्वेष रखता था और ऐसा संयोग हुआ कि मेरे एक बड़े भाई थे उन्होंने तहसीलदारी की परीक्षा दी थी और परीक्षा में पास हो गए थे और वह अभी घर में क़ादियान में थे और नौकरी के उम्मीदवार थे। एक दिन में अपने चौबारे में असर के समय क़ुरआन शरीफ पढ़ रहा था जब मैंने क़ुरआन शरीफ का दूसरा पृष्ठ पलटना चाहा तो उसी हालत में मुझ पर कश्फ़ की हालत तारी हो गई और मैंने देखा कि सहजराम काले कपड़े पहने हुए और विनम्रतापूर्वक दांत निकाले हुए मेरे सामने खड़ा हुआ जैसा कि कोई कहता है कि मुझ पर दया करवा दो। मैंने उसको कहा कि अब दया का समय नहीं है और साथ ही ख़ुदा ताला ने मेरे दिल में डाला कि इसी समय यह व्यक्ति मर गया है और कोई ख़बर न थी। इसके बाद मैं नीचे उतरा और मेरे भाई के पास 6-7 आदमी बैठे हुए थे और उनकी नौकरी के बारे में बातें कर रहे थे। मैंने कहा कि अगर पंडित सहजराम मर जाए तो वह ओहदा भी अच्छा है। उन सब ने मेरी बात सुनकर ज़ोर का ठहाका लगाया कि क्या अच्छे भले आदमी को मारते हो। दूसरे या तीसरे दिन ख़बर आ गई कि उसी घड़ी सहजराम अकस्मात मौत से इस संसार को छोड़ गया।

★इसीलिए हर समय नमाज़ में यह दुआ ख़ुदा तआला ने सिखाई है और अनिवार्य कर दी है कि इसके बिना नमाज़ नहीं हो सकती कि غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ अर्थात ऐसा न हो कि हम مُنۡعَمۡ عَلَيۡهِ होने के बाद مَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ हो जाएँ अत: हमेशा ख़ुदा तआला की बेनियाज़ी से डरते रहना चाहिए।

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

एक मोमिन को, एक ऐसे व्यक्ति को जो यह दावा करता है कि मैं ख़ुदा तआला पर ईमान रखता हूँ, अल्लाह तआला के इस आदेश को सदैव सम्मुख रखना चाहिए कि अल्लाह तआला ने हमें इबादत के लिए पैदा किया है। फिर अल्लाह तआला ने हमें उपासना की रीतियाँ भी बताईं जिनमें क्रियात्मक अंश भी है, अर्थात प्रत्यक्ष क्रियाएँ तथा दुआओं के शब्द भी हैं जिसे ज़िक्र भी कह सकते हैं। नमाज़ में ये दोनों बातें विद्यमान हैं अर्थात प्रत्यक्ष क्रियाएँ भी हैं और स्तुति भी है, दुआएँ भी हैं। किन्तु नमाज़ों के अतिरिक्त भी ज़िक्र तथा दुआएँ और ख़ुदा तआला को याद रखना एक मोमिन का काम है

क़ुरआन-ए-करीम में ही अल्लाह तआला ने अनेक दुआएँ विभिन्न नबियों के माध्यम से बताई हैं जो हम नमाज़ में भी पढ़ सकते हैं तथा चलते फिरते ज़िक्र के रूप में भी पढ़ते हैं

आज मैं एक ज़िक्र के बारे में भी बताना चाहता हूँ जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत भी है और ख़ुदा तआला की ओर से उतरी हुई दुआएँ भी हैं जिनके अर्थों पर विचार करके पढ़ने से जहाँ इंसान अल्लाह तआला की तौहीद का आभास कर लेता है वहाँ अल्लाह तआला की सुरक्षा और शरण में भी आता है तथा हर प्रकार के कष्टों से भी सुरक्षित रहता है

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न केवल यह कि स्वयं यथावत रूप से प्रति दिन, रात को सोने से पहले इन आयतों तथा दुआओं को पढ़ा करते थे अपितु सहाबा को भी पढ़ने की प्रेरणा देते थे तथा अनेक स्थानों पर इन दुआओं के महत्त्व एवं लाभ आपने बयान फरमाए हैं

नबी करीम की हदीसों के हवाले से आयतल कुर्सी, सूरतुल इखलास, सूरतुल फ़लक़ और सूरतुन्नास की श्रेष्ठताओं का वर्णन और सुन्नत-ए-नबी[स.] के आलोक में इन दुआओं को नियमित रूप से पढ़ने की तहरीक

जिस काम को आपने यथावत् रूप से जारी रखा अथवा यथावत रूप से किया, यह आपकी सुन्नत बनी तथा इस काम को प्रत्येक मुसलमान को करना चाहिए और हम अहमदी जिनको इस युग में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रत्येक सुन्नत पर अमल करने की ओर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मार्ग दर्शन किया है, हमें उसके अनुसार करने के विशेष प्रयास करने चाहिएँ तथा विशेष रूप से इन परिस्थितयों में जिनमें से हम गुज़र रहे हैं दुआओं और नमाज़ों तथा ज़िक्र की ओर विशेष रूप से, न केवल अपनी व्यक्तिगत आध्यात्मिक तथा सांसारिक आवश्यकताओं के लिए ध्यान देना चाहिए बलकि जमाअती फितनों और फसादों और द्वेष रखने वालों तथा दुश्मनों के षड्यंत्र से बचने के लिए भी एक अत्यधिक महत्त्व पूर्ण कर्तव्य समझकर ध्यान देना चाहिए।

खेद है मुसलमानों की हालत पर कि अल्लाह तआला ने उन्हें एक दुआ सिखाई और प्रकाश के बाद अंधेरे और गुमराही के फित्नेसे बचने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इन दुआओं को प्रतिदिन नियमित रूप से पढ़ा करो ताकि तौहीद पर भी क़ायम रहो और अंधकार के फ़ितनों से भी बचो। किन्तु मुसलमानों ने उसकी परवाह नहीं की

आजकल नासतिकता तथा संसारिकता का भी बड़ा ज़ोर है तथा दुनियादारी ने अपने पंजे इतने अधिक इस समाज में सामान्यत्या गाड़ दिए हैं कि कुछ युवा उससे प्रभावित हो जाते हैं। अत: ये दुआएँ जब हम अपने ऊपर फूंकें तो साथ ही अपने बच्चों पर भी फूंकें ताकि हर प्रकार की दुर्घटनाओं से हमारी पीढियाँ भी सुरक्षित रहें तथा दीन पर स्थापित रहने वाली तथा ख़ुदा तआला की वहदानियत (एकत्व, अद्वैतवाद) को समझने वाली हों।

अल्लाह तआला करे कि हममें से प्रत्येक इन सूरतों के भावार्थ को समझते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि की सुन्नत के अनुसार अमल करने वाला हो। अल्लाह ताला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे और हम नियमित रुप से सोने से पहले यह आयतें पढ़कर उन दोनों को आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश अनुसार अपने पर फूंकने वाले हों। अल्लाह ताला इसका सामर्थ्य प्रदान करे

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 16 फरवरी 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

एक मोमिन को, एक ऐसे व्यक्ति को जो यह दावा करता है कि मैं ख़ुदा तआला पर ईमान रखता हूँ, अल्लाह तआला के इस आदेश को सदैव सम्मुख रखना चाहिए कि अल्लाह तआला ने हमें इबादत के लिए पैदा किया है। जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है- وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ अर्थात- जिन्न व इन्स को इबादत के लिए पैदा किया है। फिर अल्लाह तआला ने हमें उपासना की रीतियाँ भी बताईं जिनमें क्रियात्मक अंश भी है, अर्थात प्रत्यक्ष क्रियाएँ तथा दुआओं के शब्द भी हैं जिसे ज़िक्र भी कह सकते हैं। नमाज़ में ये दोनों बातें विद्यमान हैं अर्थात प्रत्यक्ष क्रियाएँ भी हैं और स्तुति भी है, दुआएँ भी हैं। किन्तु नमाज़ों के अतिरिक्त भी ज़िक्र तथा दुआएँ और ख़ुदा तआला को याद रखना एक मोमिन का काम है। क़ुरआन-ए-करीम में ही अल्लाह तआला ने अनेक दुआएँ विभिन्न नबियों के माध्यम से बताई हैं जो हम नमाज़ में भी पढ़ सकते हैं तथा चलते फिरते ज़िक्र के रूप में भी पढ़ते हैं। लोग अपने पत्रों में लिखते हैं कि हमें अमुक कठिनाई है, अमुक कष्ट है कोई दुआ और ज़िक्र

बताएँ जिसको हम बार बार दोहराते रहा करें तथा हमारे कष्ट और दुविधाएँ दूर हों। सामान्यत्या लागों को मैं यही लिखता हूँ कि नमाज़ों की ओर ध्यान दें, सजदों में दुआएँ करें, नमाज़ में दुआएँ करें तथा अपने ख़ुदा तआला से सहायता मांगें परन्तु आज मैं एक ज़िक्र के बारे में भी बताना चाहता हूँ जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत भी है और ख़ुदा तआला की ओर से उतरी हुई दुआएँ भी हैं जिनके अर्थों पर विचार करके पढ़ने से जहाँ इंसान अल्लाह तआला की तौहीद का आभास कर लेता है वहाँ अल्लाह तआला की सुरक्षा और शरण में भी आता है तथा हर प्रकार के कष्टों से भी सुरक्षित रहता है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न केवल यह कि स्वयं यथावत रूप से प्रति दिन, रात को सोने से पहले इन आयतों तथा दुआओं को पढ़ा करते थे अपितु सहाबा को भी पढ़ने की प्रेरणा देते थे तथा अनेक स्थानों पर इन दुआओं के महत्त्व एवं लाभ आपने बयान फरमाए हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अपने अपने अमल के बारे में इस संबंध में रिवायत आती है।

रिवायत में आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सदैव सोते समय आयतुल कुर्सी, सूर: इख़लास, सूर: फलक़ तथा सूर: अन्नास तीन बार पढ़कर हाथों पर फूंकते थे और फिर अपने हाथों को शरीर पर इस प्रकार फेरते कि सिर से आरम्भ करके जहाँ तक शरीर पर हाथ जा सकता, फेरते।

अतएव जिस काम को आपने यथावत् रूप से जारी रखा अथवा यथावत रूप से किया, यह आपकी सुन्नत बनी तथा इस काम को प्रत्येक मुसलमान को करना चाहिए और हम अहमदी जिनको इस युग में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रत्येक सुन्नत पर अमल करने की ओर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मार्ग दर्शन किया है, हमें उसके अनुसार करने के विशेष प्रयास करने चाहिएँ तथा विशेष रूप से इन परिस्थितयों में जिनमें से हम गुज़र रहे हैं दुआओं और नमाज़ों तथा ज़िक्र की ओर विशेष रूप से, न केवल अपनी व्यक्तिगत आध्यात्मिक तथा सांसारिक आवश्यकताओं के लिए ध्यान देना चाहिए बल्कि जमाअती फितनों और फसादों और द्वेष रखने वालों तथा दुश्मनों के षड्यंत्र से बचने के लिए भी एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण कर्तव्य समझकर ध्यान देना चाहिए।

इस ज़िक्र तथा आयतों का महत्त्व कुछ अन्य हदीसों के द्वारा भी ज्ञात होता है जो मैं आपके सामने रखता हूँ। जहाँ तक आयतुल कुर्सी का संबंध है तो उसके विषय में दो जुम्अ: पहले मैं बयान कर चुका हूँ। आज क़ुरआन-ए-करीम की अन्तिम तीन सूरतों के विषय में हदीसों के माध्यम से बात करुंगा कि किस प्रकार बार बार और विभिन्न रूपों में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा को और इन सूरतों को पढ़ने के बारे में ध्यान दिलाया।

एक रिवायत में अंतिम तीनो "क़ुल" पढ़ कर शरीर पर फूंकने के बारे में हज़रत आयशा रज़ी॰ बयान फरमाती हैं कि हर रात नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब बिस्तर पर लेटते तो अपनी हथेलियों को जोड़ते तथा उनमें قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ व قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ तथा قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ पढ़कर फूंकते, फिर जहाँ तक सम्भव होता दोनों हाथों को शरीर पर फेरते, आप तीन बार ऐसा करते।

(सहीह बुख़ारी किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, बाब फज़लुल मुव्विज़तान)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसकी व्यवस्था इतने यथावत रूप से फरमाते थे कि हज़रत आयशा रज़ीयल्लाहु अन्हा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अन्तिम बीमारी में स्वयं ये दुआएँ पढ़तीं और आपके हाथों पर फूंक कर आपके ही हाथ आपके शरीर पर फेरतीं।

(सहीह बुख़ारी किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, बाब फज़लुल मुव्विज़तान)

यह विचार हज़रत आयशा को आना नि:सन्देह इस कारण से था कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस क्रिया में बड़े नियमित थे तथा इसकी बरकत का महत्त्व हज़रत आयशा पर भली भांति स्पष्ट किया हुआ था।

फिर सहाबा को इन सूरतों की बरकतें तथा महत्त्व का किस प्रकार आभास दिलाया, इस बारे में हज़रत उकबा बिन आमिर बयान करते हैं कि मेरी रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भेंट हुई, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आगे बढ़ कर मेरा हाथ पकड़ लिया और फरमाया- हे उकबा बिन आमिर! क्या मैं तुम्हें तौरात और इंजील और ज़बूर और फुर्क़ान-ए-अज़ीम में जो सूरतें उतारी गईं हैं उनमें से तीन अति उत्तम सूरतों के विषय में न बताऊँ? मैंने निवेदन किया कि क्यूँ नहीं, अल्लाह मुझे आप पर फिदा करे, फिर आपने मुझे قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ व قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ तथा قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ पढ़कर सुनाईं। फिर फरमाया- ऐ उकबा! तुम इन्हें मत भूलना और कोई रात ऐसी मत गुज़ारना जब तू इन्हें न पढ़ ले। उकबा कहते हैं कि जब से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह फरमाया कि तू इन्हें न भूलना तो उस समय से मैं इन्हें नहीं भूला तथा मैंने कोई रात ऐसी नहीं गुज़ारी जब मैंने इन्हें पढ़ न लिया हो।

(मस्नद अहमद बिन हम्बल, मस्नद उक़बा बिन आमिर, जिल्द 5पृष्ठ 895-896 हदीस न 17467)

अत: आप का यह फरमाना कि तुम इन्हें मत भूलना और कोई रात ऐसी मत गुजारना कि जब तक इन्हें पढ़ न लो स्पष्ट करता है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं भी कितने नियमित रूप से इसको पढ़ा करते थे। अल्लाह तआला की बातों पर, आदेशों पर, दुआओं पर सबसे अधिक अमल करने वाले आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम थे और तब ही आप दूसरों को फ़रमाया करते थे।

फिर सूर: इख़लास के महत्त्व के विषय में हज़रत सईद खुदरी रज़ी॰ रिवायत करते हैं कि एक व्यक्ति ने एक आदमी को क़ुल हुवल्लाहु अहद पढ़ते हुए सुना जो इसको बार बार पढ़ रहा था। जब सुबह हुई तो उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित होकर सारी बात बयान की तथा जैसे कि वह उस व्यक्ति को कम या छोटा समझ रहा था इस लिए शिकायत के रंग में बयान किया। इस पर रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया- कसम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है, यह क़ुरआन के तीसरे भाग के बराबर है।

(सहीह बुख़ारी किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, बाब क़ुल हुवल्लाहु अहद)

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ी॰ बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा से फरमाया कि क्या तुम में से कोई इस बात में विवश है कि एक रात में एक तिहाई क़ुरआन मजीद पढ़े। यह बात सहाबा को बड़ी जटिल अनुभव हुई। उन्होंने कहा, या रसूलुल्लाह! हम में कौन इसका सामर्थ्य रखता है कि एक तिहाई क़ुरआन-ए-करीम रात में पढ़ ले। आपने फरमाया कि अल्लाहु वाहिदुस्समद, अर्थात सूर: इख़लास एक तिहाई क़ुरआन है।

(सहीह बुख़ारी किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, बाब क़ुल हुवल्लाहु अहद)

सूर: इख़लास के क़ुरआं करीम के तीसरे भाग के बारे में सहीह मुस्लिम में एक रिवायत यों लिखी है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ि रिवायत करते हैं कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया- तुम एकत्र हो जाओ मैं तुम्हें क़ुरआं करीम का एक तिहाई भाग पढ़ कर सुनाऊंगा। सबको एकत्र किया गया कि मस्जिद में आजाओ अत: लोग इकट्ठे हो गए फिर रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहार तशरीफ़ लाए और क़ुल हुवल्लाहु अहद की तिलावत फरमाई। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अन्दर तशरीफ़ ले गए। सहाबा कहते हैं कि हम में से किसी ने कहा कि आसमान से कोई सूचना आए है जिसके कारण आप अपने घर तशरीफ़ ले गए हैं। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहार तशरीफ़ लाए और फ़रमाया मैंने तुमसे कहा था कि मैं तुमको क़ुरआन का तीसरा भाग पढ़ कर सुनाऊंगा, ध्यान पूर्वक सुनो कि यह सूर: इखलास क़ुरआन के तीसरे भाग के बराबर है।

(सहीह मुस्लिम किताब सलातुल मुसाफिरीन व कस्रुहा, बाब फज़्लु किरअते क़ुल हुवल्लाहु अहद)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसको तीसरा भाग क्यूँ कहा? इस लिए कि अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम को तौहीद (एकेश्वरवाद) को प्रमाणित करने तथा इसको स्थापित करने के लिए अवतरित फरमाया। अतएव इस सूर: में बड़े स्पष्ट एवं व्यापक शब्दों में तौहीद को बयान किया गया है। इस लिए इसके शब्दों पर विचार करने तथा इनके अनुसार कर्म करने से इंसान वास्तविक तौहीद पर अमल कर सकता है। इंसान को केवल इतना ही नहीं समझ लेना चाहिए कि मैंने सूर: इख़लास पढ़ ली तो तीन भाग क़ुरआन-ए-करीम का पढ़ लिया। इसका अर्थ यह है कि तुम लोग इसको पढ़ो तथा फिर तौहीद पर कायम हो तथा इसके अनुसार कर्म करो।

इसी प्रकार कुछ रिवायतों में कुछ अन्य आयतें भी हैं जिनके बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह एक भाग है, यह एक चौथाई

भाग है, यदि इसी को माना जाए तो मानो इन कुछ आयतों को पढ़ कर लोग कहेंगे कि क़ुरआं करीम पूर्ण हो गया जबकि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इससे अभिप्राय यह है कि ये ऐसी बातें है जिन पर तुम लोग अमल करो और फिर क़ुरआं करीम पर विचार करो, तौहीद के क़याम की कोशिश करो तो तभी तुम क़ुरआन करीम के पढ़ने वाले होगे और क़ुरआन-ए-करीम क्या है? क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षा तौहीद के कयाम के लिए ही है जिसके लिए प्रत्येक इंसान को प्रयास भी करना चाहिए और दुआ भी करनी चाहिए।

फिर हज़रत आयशा रज़ीयल्लाहु अन्हा से एक रिवायत है, आप बयान करती हैं कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक व्यक्ति को एक सिरये (ऐसा सामूहिक अभियान जिसकी अगुवाई के लिए किसी अन्य को भेजा जाता था) का अमीर बनाकर भेजा जो अपने साथियों को नमाज़ पढ़ाता था तथा क़ुरआन के अन्त में क़ुल हुवल्लाहु अहद पढ़ता था। जब सहाबा वापस आए तो उन्होंने इस बात की चर्चा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से की, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया- उससे पूछो कि वह ऐसा क्यों करता है। सहाबा ने जब उससे पूछा तो उसने कहा- इस लिए कि यह रहमान ख़ुदा की विशेषता है, इस कारण से मैं इसको पढ़ना पसन्द करता हूँ। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम लोग उसे सूचना दे दो कि अल्लाह तआला भी उससे प्रेम रखता है।

(सहीहह मुस्लिम किताब सलातुल मुसाफिरीन व कस्रुहा, बाब फज़्लु किरअते क़ुल हुवल्लाहु अहद)

फिर इसी बारे में बुख़ारी में हज़रत अनस के हवाले से एक हदीस है हज़रत अनस से रिवायत है कि एक अंसार आदमी मस्जिद क़बा में उनकी इमामत कराया करता था वह जब इन सूरतों में से जो नमाज़ में पढ़ी जाती हैं जब कोई सूर: आरम्भ करता तो पहले "क़ुल हुवल्लाहु अहद" अर्थात सूर: इखलास पढ़ता। जब उसे पढ़ लेता तो उसके साथ कोई और सूर: पढता और प्रत्येक रकत में ऐसा ही करता। उसके साथियों ने इस बारे में उससे बात की और कहा कि तुम सूर: इखलास से आरम्भ करते हो और फिर उसको अपर्याप्त समझ कर एक और सूर: भी उसके साथ पढ़ते हो, या तो तुम इसी को पढ़ा करो या फिर इसको छोड़ दो कोई दूसरी सूर: पढ़ो। उसने कहा मैं तो उसे कदापि नहीं छोडूंगा। यदि तुम पसंद करते हो कि मैं इसी प्रकार तुम्हारी इमामत कराऊँ तो मैं तुम्हारा इमाम रहूँगा और यदि तुम्हें यह पसंद नहीं है तो मैं तुम्हें छोड़ दूंगा, सूर: को नहीं छोडूंगा। वे लोग उसको अपने मध्य सबसे बेहतर समझते थे। उन्होंने पसंद न किया कि उसके सिवा कोई और उनका इमाम बने। जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आए तो उन्होंने आप को उसकी सूचना दी। आपने फ़रमाया- हे अमुक! जो बात तुम्हारे साथी तुमसे कहते हैं उस बात को करने से तुम्हें क्या रुकावट है? (अर्थात सूर: इखलास न पढ़ो या केवल वही पढ़ो दूसरी कोई सूर: न पढ़ो, तो दो मिलकर पढ़ने का क्या कारण है?) और क्या कारण है कि तुमने यह सूर: हर रकत में अनिवार्य कर ली है? उसने कहा कि यह सूर: मुझे बहुत प्रिय है। आपने फ़रमाया उसकी मुहब्बत ने तुम्हें जन्नत में दाखिल कर दिया।

(सहीह बुख़ारी किताबुल अज़ान, बाब अल्जमउ बैना सूरतैन फ़िर्रकत)

फिर हज़रत अबी बिन कअब बयान करते हैं कि जब मुश्रिकों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि अपने रब्ब का परिवार परिचय हमें बताएँ, इस पर अल्लाह तआला ने قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ۔ اَللّٰهُ الصَّمَدُ अवतरित फरमाई। अत: समद वह है जो न किसी का बाप है, न उसका कोई बाप है। क्यूँकि कोई भी वस्तु ऐसी नहीं जो पैदा हुई हो किन्तु मरना अवश्य है तथा कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जिसने मरना है और अवश्य ही उसका कोई न कोई उत्तराधिकारी होगा। जब अल्लाह अज़्ज़ा व जल न तो वफात पाएगा न ही उसका कोई उत्तराधिकारी होगा وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا أَحَدٌ कि उसके समान कोई नहीं तथा न ही कोई उसके जैसा तथा न ही कोई उसके बराबर है।

(सुनन तिरमिज़ी, अबवाब तफ्सीरुल क़ुरआन)

फिर एक स्थान पर इस बारे में रिवायत है कि हज़रत अबू हुरैरा बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि लोग आपस में एक दूसरे से पूछते हैं कि प्रत्येक वस्तु को अल्लाह तआला ने पैदा किया तो अल्लाह तआला को किसने पैदा किया? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया- अत: जब तुम ऐसे लोगों को देखो तो قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ कहो, यहाँ तक तुम यह सूर: समाप्त कर लो, अर्थात सूर: इख़लास पूरी पढ़ो। इसके अर्थों पर विचार करो तो तुम्हें पता लग जाएगा कि अल्लाह तआला को पैदा करने वाली कोई चीज़ नहीं, वह अनन्त काल से है और अन्त काल तक रहेगा, सदैव से है तथा सदैव रहेगा। फरमाया कि फिर उसको चाहिए कि वह शैतान से बचने के लिए शरण मांगे तो वह उसको कोई हानि नहीं पहुंचा सकेगा।

(अल इबानतुल कुबरालिइब्ने बत्ताबाब तर्के सुआले)

हज़रत आबु हुरैरा बयान करते हैं मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ आया आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमने एक आदमी को क़ुल हुवल्लाहु अहद अललहूस्समद पढ़ते हुए सुना तो आपने फरमाया अनिवार्य हो गई। मैंने पूछा क्या चीज़ अनिवार्य हो गई? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि श्रद्धा भाव से यह पढ़ रहा है इसके लिए जन्नत अनिवार्य हो गई।

(सुनन तिरमिज़ी, अबवाब तफ्सीरुल क़ुरआन)

फिर हज़रत सुहेल बिन सअद से रिवायत है एक आदमी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया तथा अपनी निर्धनता की शिकायत की। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब तू अपने घर में प्रवेश करे तो यदि कोई घर में उपस्थित हो तो अस्सलामु अलैकुम कहा करो तथा यदि कोई न हो तो अपने ऊपर ही सलामती भेजा करो और एक बार क़ुल हुवल्लाहु अहद पढ़ा करो, तो उस व्यक्ति ने ऐसा ही किया यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उसको इतनी सम्पत्ति प्रदान कर दी कि उसके पड़ौसी भी उसके द्वारा लाभान्वित होने लगे।

(रूहुल बयान लिइस्माईल हक़्क़ी बिन मुस्तफा जिल्द 10 पृष्ठ 558)

अर्थात अल्लाह तआला ने इसकी बरकत से उसे इतना माल दिया कि एक समय ऐसा था कि वह स्वयं उसका हाथ तंग था भूखा रहता था अब इतनी बढ़ोतरी हुई कि अपने पड़ोसियों की भी सहायता करने लगा।

अत: जब इंसान तौहीद का पाठ सीख ले तथा उसके अनुसार कर्म करे तथा समस्त शक्तियों एवं सामथर्यों का स्वामी ख़ुदा तआला को समझे तो अल्लाह तआला फिर अत्यधिक प्रदान करता है। अल्लाह तआला फरमाता है कि वह मुत्तकी को ऐसे ऐसे माध्यमों के द्वारा सम्पत्ति प्रदान करता है जहाँ से वह सोच भी नहीं सकता।

हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत है कि एक व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहा कि मुझे यह सूर: क़ुल हुवल्लाहु अहद बहुत पसंद है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया तेरा इस सूर: से प्यार तुझे जन्नत मे दाखिल कर देगा।

(मस्नद अहमद बिन हम्बल, मस्नद अनस बिन मालिक हदीस- 12432)

हज़रत जाबिर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिसने प्रतिदिन पचास बार قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ पढ़ी उसे कयामत के दिन उसकी कब्र से पुकारा जाएगा कि खड़ा हो जा तथा जन्नत में दाखिल हो जा।

(अल्मु'जमुल औसत, बाब इलयायु मन इस्मुहु याक़ूब हदीस- 9446)

इब्ने देलमी से रिवायत है जो नजाशी की बहिन के बेटे थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा भी करते रहे थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिसने नमाज़ में अथवा इसके अतिरिक्त सौ बार قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ पढ़ा, अल्लाह तआला ने उसके लिए आग से मुक्ति अनिवार्य कर दी।

(अल्मुअजमुल कबीर लि तिबरानीजिल्द 18 पृष्ठ 331)

अतएव यह महत्ता है सूर: इख़लास की। और जब हम रात को पढ़ें तो अल्लाह तआला की तौहीद को सामने रखते हुए हमें यह पढ़नी चाहिए, जब हम कहें कि अल्लाह तआला "अहद" है तो साथ ही उसके समद" होने का मुकाम ओर मरतबा भी हमारे सामने आना चाहिए। "समद" वह चीज़ है जो किसी की मोहताज नहीं और कभी समाप्त होने वाली नहीं है कभी नष्ट होने वाली नहीं है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम समद का अर्थ बयान करते हुए फरमाते हैं- समद का अर्थ कि उसके अतिरिक्त समस्त वस्तुएँ पैदा हो सकती हैं तथा नष्ट हो सकती हैं।

(बराहीन-ए-अहमदिया पृष्ठ 433)

अर्थात जो पैदा हो सकती हैं और होती हैं और समाप्त होने वाली हैं लेकिन अल्लाह तआला का अस्तित्व ही ऐसा है जो समद है। लोग समझते हैं कि समद का अर्थ बेनियाज़ (स्वच्छंद, आत्मनिर्भर) है बेनियाज़ी उसकी यह है कि

न वह नश्वर है, न समाप्त होने वाला है तथा न उसके जैसी वस्तु कोई पैदा हो सकती है। अत: यह हमारा ख़ुदा है जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा।

इसके बाद आप फरमाते हैं कि ख़ुदा अपनी हस्ती और सिफ़ात और जलाल में एक है, कोई उसका भागीदार नहीं। सब उसके मोहताज है कण-कण उसी से जीवन प्राप्त करता है। वह समस्त वस्तुओं के लिए उद्गम स्थल है (अर्थात संसार को लाभ पहुंचाने वाली और बरकत देने वाली उसी की हस्ती है उसी से हर एक बरकत का स्रोत फूटता है) और स्वयं किसी से बरकत प्राप्त नहीं करता (अर्थात उस को कोई लाभ पहुंचाने वाला नहीं है, वही है जो दुनिया को लाभ पहुंचा रहा है) वह न किसी का बेटा है और न किसी का बाप और हो भी कैसे, कि उसका कोई हम ज़ात ही नहीं। क़ुरआन ने बार बार ख़ुदा का कमाल प्रस्तुत करके और उसकी महानता दिखा कर लोगों को ध्यान दिलाया है कि देखो ऐसा ख़ुदा दिलों को खींचता है न कि मुर्दा और कमज़ोर और कम दयावान और कम शक्तिशाली।

(इस्लामी उसूल की फिलॉसफी पृष्ठ 103, बहवाला तफ़्सीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिल्द नंबर 4 पृष्ठ 757)

सूर: इखलास, सूर: फलक और सूर: अन्नास के अवतरित होने के बारे में हज़रत उक़्बा बिन आमिर से रिवायत है वह कहते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम ने फरमाया कि आज रात ऐसी आयातें उतरी हैं कि उन जैसी पहले कभी नहीं देखी गई और वह यह है अर्थात कुल हुवल्लाहु अहद, कुल आऊज़ु बिरब्बिलफलक़, क़ुल अऊज़ुबिरब्बिन्नास।

(सहीह मुस्लिम किताब सलातुलमुसाफिरीन)

फिर हदीसों में तीनों क़ुल पढ़ने के बारे में हज़रत उकबा बिन आमिर जुहनी बयान करते हैं कि एक बार मैं एक जंगी सफर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सवारी की लगाम पकड़ कर आगे आगे चल रहा था कि आप ने फरमाया कि- हे उक़्बा पढ़। मैंने आपकी ओर कान लगाया ताकि आप जो कहें मैं पढ़ूँ। फिर कुछ देर के बाद फरमाया-हे उक़्बा पढ़। मैंने फिर ध्यान लगाया कि आप क्या फरमाते हैं। क्या पढ़ूँ मैं? आपने तीसरी बार फिर यही फरमाया- तो मैंने निवेदन किया कि मैं क्या पढ़ूँ? आपने फरमाया सूर: कुल हुवल्लाहु अहद फिर आपने अंत तक सूर: पढ़ी। फिर आपने कुल आऊज़ु बिरब्बिलफलक़ अंत तक पढ़ी। मैं भी आपके साथ पढ़ता रहा। फिर आपने क़ुल अऊज़ुबिरब्बिन्नास अंत तक पढ़ी। मैं भी आपके साथ पढ़ता रहा। फिर आप ने फरमाया- किसी व्यक्ति ने इन जैसी सूरतों या कलाम के साथ अल्लाह तआला की शरण प्राप्त नहीं की।

(सुनन निसाइ किताबुल इस्तिआज़ा हदीस 5430)

अर्थात यह ऐसा कलाम तथा ऐसी दुआ है कि जिसके द्वारा इंसान अल्लाह तआला की शरण में आ जाता है और कभी नष्ट नहीं होता और समस्त कष्टों से बचता है। अल्लाह तआला की शरण का इससे अच्छा मार्ग कोई नहीं है। हदीसों में ऐसी रिवायत मिलती है कि आप ने फरमाया कि इससे बेहतर अल्लाह तआला की और कोई शरण नहीं।

फिर सूरह फलक और अन्नास के बारे में हज़रत उक़्बा बिन आमिर से रिवायत है कि मैं एक सफर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सवारी की लगाम पकड़ कर चल रहा था। आप ने फरमाया है हे उक़्बा क्या मैं तुझे ऐसी दो सूरतें है न सिखाऊँ जिनका पढ़ना अत्यंत उत्तम और लाभकारी है? मैंने निवेदन किया कि क्यों नहीं या रसूलुल्लाह तो आप ने फरमाया- कुल आऊज़ु बिरब्बिलफलक़, क़ुल अऊज़ुबिरब्बिन्नास। और जब आपने सुबह की नमाज़ के लिए पड़ाव किया तो आपने इन्हीं को पढ़ा (यही तिलावत की) फिर जब आपने नमाज़ अदा कर ली तो मेरी ओर ध्यान देते हुए फरमाया तू कैसे देखता है (संभवता इस लिहाज से भी उन्होंने कहा हो कि बड़ी छोटी सूरतें आपने पढ़ी हैं, फरमाया इनमें तो सब कुछ है।

(सुनन अबू दाऊद, अब्वाबुल वितर, बाब फिल मुअव्वज़तैन, हदीस नंबर 1462)

एक रिवायत में आता है कि हज़रत अबू सईद रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिनों तथा इंसानों की नज़र से पनाह मांगा करते थे। जब मुअव्वज़ातैन (सूर: फलक़+ सूर: अन्नास) नाज़िल हुईं तो आप सल्लल्लाहु (अलैहि वसल्लम ने इनको ग्रहण कर लिया और बाकी सब छोड़ दिया। (सुनन इब्नेमाजा किताबुत्तिब्ब, हदीस 3511)

इस बारे मे जो भी दुआएं पहले थीं उन सबको समाप्त कर दिया और फिर यही पढ़ा करते थे।

हज़रत इब्ने आबिस से रिवायत है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझसे फरमाया कि ऐ इब्ने आबिस! क्या मैं तुझे शरण मांगने के सर्वश्रेष्ट वाक्य के विषय न बताऊँ। मैंने निवेदन किया, या रसूलुल्लाह! क्यूँ नहीं। आपने फरमाया कि वे सूरतें हैं, सूर: अलफलक़ तथा सूर: अन्नास।

(मस्नद अहमद बिन हम्बल, जिल्द 5, पृष्ठ-322, हदीस न 21025)

फिर अन्तिम दो सूरतों का महत्त्व बयान करते हुए एक सहाबी कहते हैं कि हम लोग एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ किसी यात्रा पर थे। चूंकि सवारी के जानवर कम थे इसलिए लोग बारी बारी सवार होते थे। एक अवसर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मेरे उतरने की बार थी, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पीछे से मेरे निकट आए तथा मेरे कन्धों पर हाथ रखकर फरमाया कि أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ पढ़ो, मैंने यह कलिमा पढ़ लिया, इसी प्रकार नबी करीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सूर: पूरी पढ़ी तथा मैंने भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ इसे पढ़ लिया। फिर इसी प्रकार أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ पढ़ने के लिए फरमाया तथा पूरी सूर: पढ़ी जिसे मैंने भी पढ़ लिया। फिर आपने फरमाया- जब नमाज़ पढ़ा करो तो ये दोनों सूरतें नमाज़ में पढ़ लिया करो।

(मस्नद अहमद बिन हम्बल, जिल्द 6, पृष्ठ-918, हदीस न 15527)

उकबा बिन आमिर जुहनी से रिवायत है कि मैं एक यात्रा में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ था। जब फज्र का समय हुआ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अज़ान कही तथा अकामत कही, फिर मुझे अपने दाहिनी ओर खड़ा किया फिर आपने मुअव्वज़तैन के साथ तिलावत की। जब आप नमाज़ पढ़ चुके तो फरमाया- तू ने कैसा देखा। मैंने निवेदन किया कि सत्य मैंने देख लिया या रसूलुल्लाह। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया- तू ये दोनों सूरतें पढ़ा कर जब भी तू सोए और जब भी उठे।

(अलमुसन्निफ़ फिल अहादीस वल आसार अज़ अबू बकर बिन अबी शीबा, जिल्द 1 पृष्ठ-403, हदीस न 3688)

अतएव यह महत्त्व है इन सूरतों का तथा इस ज़माने में इनके पढ़ने की महत्ता और भी अधिक हो गई है। हमारी रूहानी प्रगति तथा शैतान के आक्रमण से बचने के लिए तथा जमाअत के रूप में इस्लाम के विरुद्ध जो षड्यन्त्र हो रहे हैं, उनसे बचने के लिए। आजकल एक ओर इस्लाम के विरुद्ध, इस्लाम विरोधी शक्तियों के बड़ी चालाकी से प्रयास जारी हैं तो दूसरी ओर तथाकथित मुलसमान उलमा तथा मुसलमान लीडरों ने एक इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न कर दी है जहाँ फितना और फसाद पैदा हो चुका है। मुस्लिम उलमा मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरुद्ध भी मुस्लिम जनता को भड़काकर शैतानी शक्तियों को अवसर दे रहे हैं कि उनके हाथ दृढ़ हों। इसी प्रकार नासतिकता है तो वह भी आजकल अपनी चरम सीमा पर है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "तुम जो.....मसीह मौऊद के शत्रुओं का निशाना बनोगे, यूँ दुआ मांगा करो कि मैं प्राणियों के शर से, जो भीतरी तथा बाहरी शत्रु हैं, ख़ुदा की पनाह मांगता हूँ जो सवेरे का स्वामी है अर्थात प्रकाश को प्रकट करना उसके अधिकार में है। (यह प्रकाश आध्यात्मिक प्रकाश है जो मसीह मौऊद के आने से प्रकट हुआ) तथा मैं अंधेरी रात के शर से जो मसीह मौऊद के इंकार के फितनों की रात है, ख़ुदा की पनाह मांगता हूँ।"

(तोहफा गोलड़विया, पृष्ठ 78 हवाला तफ़सीर मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिल्द 4 पृष्ठ 762)

इनमें एक तो इस्लाम के दुश्मन लोग हैं जो इस्लामी शिक्षा पर आपत्ति करते

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

हैं तथा दूसरे इस्लाम के आलिम हैं जो अपनी गलतियों को छोड़ना नहीं चाहते तथा मसीह मौऊद के विरुद्ध लोगों को भड़काने में व्यस्त हैं, जिनमें पाकिस्तान के आलिम सबसे ऊपर हैं। अत: ऐसी परिस्थितयों में पाकिस्तान में अहमदियों को विशेष रूप से इस सुन्नत को जारी रखने की आवश्यकता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि सूर: फलक़ में जो شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ कहा गया है उसमें अन्धेरी रात के शर के फितने से बचने की दुआ है। गासिक कहते हैं रात को तथा वक़ब का अर्थ है कि अन्धेरे तथा अंधकार का छा जाना और यह अन्धेरी रात का फितना मसीह मौऊद के इंकार के फितने की अंधेरी रात है जिससे शरण मांगी गई है। खेद है मुसलमानों की हालत पर कि अल्लाह तआला ने उन्हें एक दुआ सिखाई और प्रकाश के बाद अंधेरे और गुमराही के फित्ने से बचने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इन दुआओं को प्रतिदिन नियमित रूप से पढ़ा करो ताकि तौहीद पर भी क़ायम रहो और अंधकार के फ़ितनों से भी बचो। किन्तु मुसलमानों ने उसकी परवाह नहीं की। मुसलमान तो अधिकांशत: उन फितनों में डूब रहे हैं तथा इसी कारण से आज दुनिया में गैर मुस्लिमों को मुसलमानों पर आपत्ति करने का अवसर मिल रहा है। अतएव मुसलमानों की यह हालात हमें ध्यान दिलाती है कि इन सूरतों को ध्यान पूर्वक पढ़ें ताकि हम इन अन्धेरों से बच सकें। شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ से भी अल्लाह की शरण मे रहें, जो की बुराइयाँ हैं उनसे भी जो गांठें हैं उनसे भी हम अल्लाह तआला की शरण में रहें अर्थात उन लोगों से जो इस्लाम और अहमदियात के विरुद्ध बड़े उपायों द्वारा लोगों के दिलों मे द्वेष और ईर्ष्या उत्पन्न कर रहे हैं। और इसमे जैसा कि मैंने कहा गैर मुस्लिम और नाम के उलमा दोनों सम्मिलित हैं। एक तो धर्म के विरुद्ध होने के कारण अपनी कारवाहियाँ कर रहे हैं, गैर मुस्लिम इस्लाम के विरुद्ध होने के कारण करवाहियाँ कर रहे हैं और दूसरे दीन के नाम पर अल्लाह तआला के भेजे हुए के विरुद्ध लोगों को भड़का कर यह करवाहियाँ कर रहे हैं और दोनों ही इस समूह मे सम्मिलित हैं जिनके बारे में फरमाया कि وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ फिर सूर: अन्नास में अल्लाह तआला के पालनहार, स्वामी तथा वास्तविक उपास्य होने का बयान है। यह बयान करके उसकी शरण में आने तथा शैतान की शंकाओं से बचने की दुआ की है। आजकल नासतिकता तथा संसारिकता का भी बड़ा ज़ोर है तथा दुनियादारी ने अपने पंजे इतने अधिक इस समाज में सामान्यत्या गाड़ दिए हैं कि कुछ युवा उससे प्रभावित हो जाते हैं। अत: ये दुआएँ जब हम अपने ऊपर फूंकें तो साथ ही अपने बच्चों पर भी फूंकें ताकि हर प्रकार की दुर्घटनाओं से हमारी पीढ़ियाँ भी सुरक्षित रहें तथा दीन पर स्थापित रहने वाली तथा ख़ुदा तआला की वहदानियत (एकत्व, अद्वैतवाद) को समझने वाली हों।

अल्लाह तआला करे कि हममें से प्रत्येक इन सूरतों के भावार्थ को समझते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि की सुन्नत के अनुसार अमल करने वाला हो। ख़ुदा तआला की वहदानियत का विषय हम पर स्पष्ट हो, उसके अतिरिक्त किसी अन्य के समक्ष हम झुकने वाले न हों, उसी को सारी शक्तियों का स्रोत समझें, न केवल दिल में बल्कि प्रत्येक कार्य से उसे प्रमाणित करें कि अल्लाह तआला ही सारी शक्तियों का स्रोत है, प्रत्येक प्रकाश का साधन है तथा प्रत्येक कृपा का देने वाला है। सृष्टि की बुराइयों से बचने के लिए अल्लाह ताला के आगे झुकें बजाय इसके कि सृष्टि से आशाएं रखें हज़रत महमूद अलैहिस्सलाम को स्वीकार करके हमने जिस रोशनी प्रकाश को प्राप्त कर लिया है जो हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वास्तविक प्रकाश का की छाया है अल्लाह ताला से दुआ करें कि अल्लाह ताला हमें इस पर हमेशा कायम रखें और कभी हम अंधेरों और अंधकार भटकने वाले न हों और अल्लाह ताला के इन इनामों में से जो खिलाफत का इनाम हमें मिला है उससे हम हमेशा जुड़े रहें प्रत्येक हानि पहुंचाने वाले की बुराइयों से अल्लाह ताला हमें अपनी शरण में रखे, चाहे वह धार्मिक बुराइयां हैं या सांसारिक बुराइयां हैं प्रत्येक द्वेष करने वाले के द्वेष और उसकी हानि से अल्लाह ताला हमें सुरक्षित रखें हमेशा ख़ुदा ताला को ही अपना रब्ब और अपना पालनहार समझकर हम उसकी शरण में रहें सब बादशाहो से श्रेष्ठ ख़ुदा ताला को समझें और उसकी मालिकियत पर पूर्ण विश्वास रखने वाले हों। उस वास्तविक उपास्य की उपासना के भी हक अदा करते हुए हरदम उसकी शरण में आने का प्रयत्न करें। वसवसे पैदा करने वालों की बुराइयों से बचें। इससे अल्लाह ताला की पनाह में आएं अपने दिलों को भी हर वसवसे से पवित्र रखने का प्रयत्न करें और उसके लिए अल्लाह तआला की शरण मांगते रहें। अल्लाह ताला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे और हम नियमित रुप से सोने से पहले यह आयतें पढ़कर उन दोनों को आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश अनुसार अपने पर फूंकने वाले हों। अल्लाह ताला इसका इसका सामर्थ्य प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

अख़बार बदर के पाठकों के लिए एक आवश्यक सूचना !

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की स्वीकृति से अखबार बदर के सालाना चंदे की शरह (दर) में बढ़ोतरी की गई है। नई शरह (दर) के अनुसार सालाना चन्दा 500 रूपये निर्धारित किया गया है जो अप्रैल 2018 से लागू होगा। कागज़, प्रकाशन, पोस्टिंग व अन्य खर्चों में बढ़ोतरी के कारण सालाना अंशदान (subscription) को बढ़ाना आवश्यक हो गया है। अखबार बदर के पाठकों से निवेदन है कि अब से नई शरह (दर) के अनुसार भुगतान करें और इसी प्रकार बदर के नुमाइन्दों को भी सूचना दी जाती है कि अब से नई शरह अर्थात 500 रूपये सालाना के अनुसार ही वसूली करें।

(मैनेजर साप्ताहिक अखबार बदर, क़ादियान)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

ख़ुत्बः जुमअः

आजकल इन दिनों में जहां जहां भी जमाअतें कायम हैं, पेशगोई मुस्लेह मौऊद के उपलक्ष में मुस्लेह मौऊद दिवस के जलसे आयोजित किए जा रहे हैं। 20 फरवरी की तारीख वह तारीख है जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से सूचना पाकर एक बेटे के जन्म के विषय में सूचना दी थी, जिसकी विभिन्न विशेषताओं का वर्णन किया गया था। इसके बारे में विज्ञापन प्रकाशित किया था। यह विज्ञापन 20 फरवरी 1886 को प्रकाशित हुआ और इस उपलक्ष में जैसा कि मैंने कहा जहां संभव हो वहाँ 20 फरवरी को मुस्लेह मौऊद दिवस मनाया जाता है और जहां इस तारीख वाले दिन सुविधा न हो वहाँ तारीखें आगे पीछे कर ली जाती हैं। मुस्लेह मौऊद दिवस का मनाया जाना तथा इसके विषय में जलसे आयोजित करना वास्तव में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक महान भविष्यवाणी पूरी होने के कारण है, न कि हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी के जन्म के कारण।

पेशगोई मुस्लेह मौऊद का वर्णन और इस पेशगोई के हवाले से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल रज़ि और कुछ अन्य बुज़ुर्गों की रिवायतें कि हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ही इसके पात्र हैं

स्वयं हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने अल्लाह तआला के आदेश से इस पेशगोई के पात्र होने का ऐलान किया

इस पेशगोई में मुस्लेह मौऊद की जिन निशानियों का वर्णन है वे आपके वजूद में बड़ी शान से पूरी हुईं इस दृष्टिकोण से अपनों और दूसरों के कुछ सत्यापन का वर्णन

इन जलसों में जो आजकल हो रहे हैं, पेशगोई का वर्णन तथा आपके प्रतिष्ठा पूर्ण कार्यों की बातें सुनकर जहाँ हमें हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु के दर्जे बढ़ते चले जाने के लिए दुआएँ करनी चाहिएँ वहाँ अपनी हालतों का निरीक्षण भी करना चाहिए कि अहमदियत की उन्नति के लिए एक उत्साह के साथ जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सम्पूर्ण प्रतिभाओं को निखारने तथा उपयोग करने की आवश्यकता है। यदि हम यह करेंगे तो हम अहमदियत की प्रगति को अपने जीवन में पहले से बढ़कर पूरा होते देखेंगे। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 23 फरवरी 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आजकल इन दिनों में जहां जहां भी जमाअतें कायम हैं, पेशगोई मुस्लेह मौऊद के उपलक्ष में मुस्लेह मौऊद दिवस के जलसे आयोजित किए जा रहे हैं। 20 फरवरी की तारीख वह तारीख है जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से सूचना पाकर एक बेटे के जन्म के विषय में सूचना दी थी, जिसकी विभिन्न विशेषताओं का वर्णन किया गया था। इसके बारे में विज्ञापन प्रकाशित किया था। यह विज्ञापन 20 फरवरी 1886 को प्रकाशित हुआ और इस उपलक्ष में जैसा कि मैंने कहा जहां संभव हो वहाँ 20 फरवरी को मुस्लेह मौऊद दिवस मनाया जाता है और जहां इस तारीख वाले दिन सुविधा न हो वहाँ तारीखें आगे पीछे कर ली जाती हैं।

मुस्लेह मौऊद दिवस का मनाया जाना तथा इसके विषय में जलसे आयोजित करना वास्तव में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक महान भविष्यवाणी पूरी होने के कारण है, न कि हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी के जन्म के कारण। यह स्पष्टीकरण मैंने इस लिए दिया है कि कुछ लोग प्रश्न करते हैं कि मुस्लेह मौऊद दिवस जब मनाते हैं तो फिर शेष ख़लीफाओं का जन्म दिवस क्यूँ नहीं मनाते। स्पष्ट हो कि यह दिन हज़रत मुस्लेह मौऊद का जन्म दिवस नहीं है। आपका जन्म तो 1889 में 12 जनवरी को हुई था।

अत: इस स्पष्टीकरण के बाद आज मैं पेशगोई मुस्लेह मौऊद के सम्बंध में बात करूंगा। सबसे पहले तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपने शब्दों में इस पेशगोई के शब्दों को पेश करूंगा तथा फिर यह भी कि आपके लेखों के द्वारा यह बात भी प्रमाणित है तथा आपका यह विचार था कि इस पेशगोई के सत्यार्थ हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ही थे। इसी प्रकार हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल का भी यही विचार था। कुछ अन्य बुज़ुर्गों का भी यही मत था कि इस पेशगोई के पात्र हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ही हैं। इसी प्रकार जैसा कि मैंने कहा इसकी विभिन्न विशेषताएँ थीं, संकेत थे तथा ये संकेत जिस प्रकार पूरे हुए और अपनों तथा गैरों ने जिस प्रकार वर्णन किया और उन्होंने अनुभव किया इस विषय में कुछ उदारहण पेश करूंगा।

सबसे पहले तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों मे इस भविष्यवाणी के शब्द इस प्रकार हैं आप फरमाते हैं:-

"भविष्यवाणी जो स्वयं इस विनीत से संबन्धित है आज 20 फरवरी 1886 ई जो 15 जमादी उल अव्वल है, संक्षेप में इल्हाम के शब्द नमूना के तौर पर लिखे जाते हैं और सविस्तार पुस्तक में लिखी जाएंगी (अर्थात बाद में) इंशाअल्लाह तआला। फ़रमाया कि "ख़ुदाए रहीम व करीम ने जो प्रत्येक चीज़ पर क़ादिर है जल्ला शानुहू व अ़ज्ज़ इस्मुहू - जिसकी शान प्रतापी है और उसका नाम इज़्ज़त वाला है। मुझको अपने इलहाम (ईशवाणी) से संबोधित करके फ़रमाया कि मैं तुझे एक रहमत (कृपा) का निशान देता हूँ उसी के अनुसार जो तूने मुझसे मांगा। अत: मैंने तेरी वेदनाओं को सुना और तेरी दुआओं को अपनी रहमत से क़बूलियत (मंज़ूरी) की जगह दी और तेरे सफ़र को (जो होशियारपुर और लुधियाना का सफ़र है) तेरे लिये मुबारक कर दिया। अत: क़ुदरत (शक्ति) और रहमत (कृपा) और क़ुर्बत (निकटता) का निशान तुझे दिया जाता है। फ़ज़ल और एहसान (कृपा व उपकार) का निशान तुझे प्रदान

किया जाता है और फ़तह और ज़फ़र (सफलता और विजय) की कुंजी तुझे मिलती है। हे मुज़फ्फ़र (विजेता) ! तुझ पर सलाम। ख़ुदा ने यह कहा ताकि वे जो क़ब्रों में दबे पड़े हैं, बाहर आयें और इस्लाम धर्म की प्रतिष्ठा और कलामुल्लाह (क़ुर्आन) की श्रेष्ठता लोगों पर प्रकट हो और ताकि सत्य अपनी पूरी बर्कतों के साथ आ जाए और बातिल (झूठ) अपनी पूरी बुराईयों के साथ भाग जाये और लोग समझें कि मैं क़ादिर (सामर्थ्यवान) हूँ, जो चाहता हूँ करता हूँ। अत: वे विश्वास कर लें कि मैं तेरे साथ हूँ और उन्हें जो ख़ुदा के वजूद पर ईमान नहीं लाते और ख़ुदा और ख़ुदा के धर्म और उसकी किताब और उसके पवित्र रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इन्कार और तकज़ीब (विरोध और झूठ) की दृष्टि से देखते हैं, एक खुली निशानी मिले और मुजरिमों की राह प्रकट हो जाये। अत: तुझे खुश्ख़बरी हो कि एक वजीह (प्रतापी) और पवित्र लड़का तुझे दिया जाएगा। एक ज़की ग़ुलाम (पवित्र लड़का) तुझे मिलेगा। वह लड़का तेरे ही बीज से तेरी ही सन्तान व कुल का होगा। सुन्दर, पवित्र लड़का, तुम्हारा मेहमान आता है उसका नाम अन्मवाईल और बशीर भी है। उसको मुक़द्दस रूह (पवित्र आत्मा) दी गई है और वह अशुद्धता से पवित्र है। वह अल्लाह का नूर (प्रकाश) है। मुबारक वह जो आसमान से आता है। उसके साथ फ़ज़ल है, जो उसके आने के साथ आयेगा। वह साहिबे शिकोह (प्रतापी) और अज़मत (महान) और दौलत (धनी) होगा। वह दुनिया में आयेगा और अपने मसीही नफ़स अर्थात् (मसीही शक्ति) और रूहुल हक़ की बर्कत से बहुतों को बीमारियों से साफ़ करेगा। वह कलिमतुल्लाह (अर्थात् एकेश्वरवाद का प्रतीक) है। क्योंकि ख़ुदा की रहमत (कृपा) व ग़य्यूरी (स्वाभिमान) ने उसे अपने कलिमा तम्जीद (बुज़ुर्गी व शान) से भेजा है। वह सख़्त ज़हीन व फ़हीम (बुद्धिमान एवं सूझवान) होगा और दिल का हलीम (शांत स्वभाव) और उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी (अर्थात् सांसारिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान) से पुर किया जायेगा। वह तीन को चार करने वाला होगा।...... दुशंब: (सोमवार) है मुबारक दुशन्ब: (अर्थात् सोमवार) फ़र्ज़न्द दिल बंद गिरामी अर्जुमन्द (सम्मान जनक, मनमोहक, श्रेष्ठ सुपुत्र)। مَظْهَرُ الْاَوَّلِ وَالْاٰخِرِ مَظْهَرُ الْحَقِّ وَ الْعُلَاءِ كَاَنَّ اللّٰهَ نَزَلَ مِنَ السَّمَاءِ मज़्हरूल् अव्वले वल् आख़िरि, मज़्हरूल् हक्क़े वल् अलाए कअन्नल्लाह नज़ल मिनस्समाअ। अर्थात् वह उस ख़ुदा का प्रकाश है जो हमेशा से है और सदैव रहने वाला है वह उस ख़ुदा का प्रकाश है जो सच है और महान है (उसका आना ऐसा ही है) जैसा कि अल्लाह स्वंय आकाश से उतर आया हो। जिसका आना बहुत मुबारक और ख़ुदा के प्रताप के प्रकट होने का कारण होगा। नूर आता है नूर, जिसको ख़ुदा ने अपनी इच्छा के इत्र से सुगंधित किया है। हम उसमें अपनी रूह डालेंगे। ख़ुदा का साया उसके सिर पर होगा। वह अतिशीघ्र बढ़ेगा और असीरों (गुलामों) की रुस्तगारी (मुक्ति) का कारण होगा और ज़मीन के किनारों तक शोहरत (प्रसिद्धि) पाएगा और क़ौमें (जातियां) उससे बरकत पाऐंगी। तब अपने नफ़्सी नुक़्ता आसमान अर्थात् ख़ुदा की तरफ उठाया जायेगा। व काना अम्रम् मक़्ज़िय्या (और यह काम पूरा होकर रहने वाला है)।"

(आईना कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 5 पृष्ठ 647)

तो यह पेशगोई मुस्लेह मौऊद के शब्द थे। फिर हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी के बारे में इस भविष्य वाणी के उपलक्ष में आप फरमाते हैं कि:- "ऐसा ही जब मेरा पहला लड़का मृत्यु को प्राप्त हो गया तो नादान मौलवियों तथा उनके दोस्तों और ईसाईयों और हिन्दुओं ने उसकी मृत्यु पर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और बार बार उनको कहा गया कि 20 फरवरी 1886 में यह भी एक भविष्यवाणी है कि कुछ लड़कों का निधन भी होगा। अतएव आवश्यक था कि कोई लड़का बचपन में ही फौत हो जाता। तब भी वे लोग आपत्ति से बाज़ न आए। तब ख़ुदा तआला ने एक अन्य लड़के की मुझे शुभ सूचना दी। अत: मेरे हरे इश्तिहार के सातवें पृष्ठ पर इस दूसरे लड़के के पैदा होने के बारे में यह शुभ सूचना है- दूसरा बशीर दिया जाएगा जिसका दूसरा नाम महमूद है वह यद्यपि अब तक जो 1 सितम्बर 1888 है (अब यह ऐलान आप सितंबर 1888 में फरमा रहे हैं कि यद्यपि वह अब तक जो 1 सितंबर 1888 ई है) पैदा नहीं हुआ किन्तु ख़ुदा तआला के वादे के अनुसार अपनी सीमा के भीतर अवश्य पैदा होगा। धरती आकाश टल सकते हैं परन्तु उसके वादों का टलना सम्भव नहीं।" फरमाया कि यह है इबारत सब्ज़ इश्तेहार के पृष्ठ 7 की जिसके अनुसार जनवरी 1889 में लड़का पैदा हुआ जिसका नाम महमूद रखा गया और अब तक अल्लाह तआला के फज़्ल से जीवित मौजूद है और सत्रहवीं वर्ष में है।"

(हकीकतुल वह्यी रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22 पृष्ठ 373-374)

पहले जो मैंने बताया था वह पहले का एक लेख हैफिर बाद में आगे हकीकतुल वह्यी में आपने जो लिखा है वह मैंने वर्णन किया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस बारे में और भी हवाले हैं लेकिन और अधिक हवालों के बजाए अब मैं हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल का आपके मुक़ाम के बारे में क्या विचार था, इस विषय में एक रिवायत पेश करता हूँ।

पीर मंज़ूर मुहम्मद साहिब वर्णन करते हैं। हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल के निधन से छ: महीने पूर्व हज़रत पीर मंज़ूर मुहम्मद साहब, कायद: यस्सर्नल क़ुरआन के लेखक ने अपकी सेवा में निवेदन किया कि मुझे आज हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम के विज्ञापन पढ़कर ज्ञात हो गया कि पिसर मौऊद मियाँ साहब ही हैं (अर्थात हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद)। इस पर हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल ने फरमाया- हमें तो पहले से ही मालूम है, क्या तुम नहीं देखते कि हम मियाँ साहब के साथ किस विशेष भावना से मिला करते हैं तथा उनका आदर करते हैं। पीर साहब ने यही शब्द लिखकर सत्यापन के पेश किए तो हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल ने इस पर लिखा कि "ये शब्द मैंने भाई पीर मंज़ूर मुहम्मद से कहे हैं" (और फिर हस्ताक्षर किए, नूरुद्दीन 10 सितम्बर 1913 ई,

आप फरमाते हैं कि 11 सितम्बर 1913 की शाम के बाद, (ऊपर वाली घटना के अगले दिन जो बयान किया गया है) हज़रत ख़लीफतुल मसीह घर में चारपाई पर लेटे हुए थे, मैं पाँव सहलाने लगा थोड़ी देर के बाद बिना किसी चर्चा के स्वयं फरमाया अर्थात हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल ने कि अभी यह निबन्ध प्रकाशित न करना (अर्थात यह बात कि हज़रत मिर्ज़ा बशीरुददीन महमूद अहमद ही इस पेशगोई के पात्र हैं) जब विरोध हो उस समय प्रकाशित करना।

(पिसर मौऊद पृष्ठ 27 माहनामा खालिद हज़रत मुस्लेह मौऊद नंबर जून जुलाई 2008 ई)

एक बुज़ुर्ग मुकर्रम गुलाम हुसैन साहब नम्बरदार मुहल्ला शहर सियालकोट ने हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी को आपके मुस्लेह मौऊद होने की घोषणा के बाद लिखा कि मेरे प्यारे पेशवा हादी तथा रहनुमा हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी मौऊद अय्यदहुल्लाह बिनस्रिहिल अज़ीज़......अखबार अलफज़्ल 30 जनवरी पढ़कर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करता हूँ। अलहम्दुलिल्लाह कि मेरे सपने को भी ख़ुदा तआला ने सच्चा कर दिखाया। लिखते हैं कि हुज़ूर को मालूम होगा कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल के जीवन में इस विनीत ने दफतर अल्फ़ज़ल में शादी खान साहब स्वर्गवासी सियालकोटी की उपस्थिति में हुज़ूर को मुबारकबाद दी थी कि अल्लाह तआला ने सपने में दिखलाया कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल के बाद आप ख़लीफ़ा होंगे तथा सफल होंगे और आप पर वह्यी ही नाज़िल होगी। यह सपना मैंने हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल को भी सुनाया था तथा हुज़ूर ने बड़ी ही प्रसन्नता पूर्वक इसका सत्यापन किया था और फरमाया था कि इसी कारण से इसका बड़ा विरोध आरम्भ हो गया है। सय्यद हामिद शाह साहब स्वर्गवासी को भी सपना सुनाया था। अलहम्दु लिल्लाह कि हुज़ूर ने स्वयं भी मुस्लेह मौऊद होने का दावा कर दिया। क्यूँकि हज़रत मुस्लेह मौऊद ने यह घोषणा 1944 में की थी। कहते हैं कि अन्यथा मुझको तो हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल के जीवन काल में ही आपके ख़लीफतुल्लाह तथा मुस्लेह मौऊद होने का दृढ़ विश्वास हो गया था।

(अल्फ़ज़ल क़ादियान जिल्द 32 नंबर 44 तिथि 20 फरवरी 1944 ई पृष्ठ-19)

इसी प्रकार एक अन्य बुज़ुर्ग हैं मुकर्रम सूफी मुतीउर्रहमान साहब बंगाली। हज़रत मुस्लेह मौऊद के नाम अपने एक पत्र में लिखते हैं (मुस्लेह मौऊद का जो ऐलान हुआ था उसके बाद उन्होंने लिखा था) कि- मैं अपने एक स्वप्न का वर्णन कर देना उचित समझता हूँ। यह स्वप्न मैंने 30 या 24 साल पहले देखा था, एक बार पहले भी हुज़ूर अनवर की सेवा में लिख चुका हूँ अब हुज़ूर अक़्दस के मुस्लेह मौऊद होने का दावा करने पर मुझे इस बात पर विश्वास हो आया है कि यह स्वप्न इस भविष्यवाणी के बारे में है। मैंने सपने में देखा कि ईद का जलसा है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक बड़े ही ऊँचे स्थान पर खड़े होकर हरा चोगा पहने सम्बोधन फरमा रहे हैं। सम्बोधन की समाप्ति पर जब मैं हाथ मिलाने के लिए बढ़ा तो देखा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम नहीं अपितु हुज़ूर-ए-अनवर हैं (अर्थात हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी हैं)। यह सपना मैंने कप्तान डा. बदरुद्दीन साहब तथा अपने भाई जनाब मौलवी ज़िल्लुर्रहमान साहब मुबल्लिग बंगाल की सेवा में बयान किया। मौलवी ज़िल्लुर्रहमान साहब ने बताया कि तुमको हज़रत अमीरुल मोमिनीन के विषय में जो मसीह मौऊद की पेशगोई है

कि वह हुस्न व एहसान में तेरा नज़ीर होगा, इसके विषय में दिखाया गया।

(अल्फ़ज़ल क़ादियान जिल्द 32 नंबर 199 तिथि 25 अगस्त 1944 ई पृष्ठ-2)

इसी प्रकार हज़रत शेख मुहम्मद इस्माईल साहब सरसावी का बयान है कि "हमने बहुत बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सुना है, आप फरमाया करते थे कि वह लड़का जिसका पेशगोई में वर्णन है, वह मियाँ महमूद ही हैं और हमने आपसे यह भी सुना, आप फरमाया करते थे कि मियाँ महमूद में इतना अधिक दीन का जोश पाया जाता है कि मैं कई बार उनके लिए विशेष रूप से दुआ करता हूँ।"

(अल्हकम 28 दिसंबर 1939 ई माहनामा खालिद हज़रत मुस्लेह मौऊद नंबर जून- जुलाई 2008 ई पृष्ठ 38)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु को जब तक अल्लाह तआला ने नहीं कहा, आपने मुस्लेह मौऊद होने का दावा नहीं किया तथा जब आपको स्पष्ट रूप में घोषणा करने की अनुमति दी गई तब आपने घोषणा की। उस समय आपने यह फरमाया कि इस में सन्देह नहीं कि इस मौऊद बेटे के विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो निशानियाँ बयान फरमाई हैं उनमें से कई एक के पूरा होने के कारण हमारी जमाअत के बहुत से लोग यह कहते थे कि यह पेशगोई मेरे ही विषय में है किन्तु मैं सदैव यह कहता था कि जब तक अल्लाह तआला मुझे यह आदेश न दे कि मैं ऐसी कोई घोषणा करूँ, मैं नहीं करूँगा। अन्तत: वह दिन आ गया जब ख़ुदा तआला ने मेरी ज़बान से ऐलान कराना था।

(अल्फ़ज़ल क़ादियान जिल्द 14/49 नंबर 40 तिथि 19 फ़रवरी 1960 ई पृष्ठ-7)

फिर आपने ऐलान के समय जलसा होशियारपुर में फरमाया कि- "मैं ख़ुदा के आदेशानुसार कसम खाकर यह घोषणा करता हूँ कि ख़ुदा ने मुझे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पेशगोई के अनुसार आपका वह मौऊद बेटा घोषित किया है जिसने ज़मीन के किनारों तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नाम पहुंचाना है।"

(अल्फ़ज़ल क़ादियान जिल्द 12/47 नंबर 13 तिथि 15 जनवरी 1958 ई पृष्ठ-4)

फिर लाहौर के जलसे में आपने फरमाया- मैं उस वाहिद और कह्हार की कसम खाकर कहता हूँ जिसकी झूठी कसम खाना धिक्कृत लोगों का कार्य है तथा जिसपर झूठ गढ़ने वाला उसके प्रकोप से बच नहीं सकता कि ख़ुदा ने मुझे इस शहर लाहौर में नम्बर 13 टैम्पिल रोड पर शेख बशीर अहमद साहब एडवोकेट के मकान में यह सूचना दी है कि मैं ही मुस्लेह मौऊद की पेशगोई का सत्यार्थ हूँ और मैं ही वह मुस्लेह मौऊद हूँ जिसके द्वारा इस्लाम दुनिया के किनारों तक पहुंचेगा तथा तौहीद दुनिया में कायम होगी।

(अल्फ़ज़ल क़ादियान जिल्द 12/47 नंबर 13 तिथि 15 जनवरी 1958 ई पृष्ठ-4)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पेशगोई मुस्लेह मौऊद में मौऊद बेटे की जो निशानियाँ बताई थीं, वे पचास से अधिक निशानियाँ हैं तथा आपकी ये विशेषताएँ अपनों तथा गैरों ने किस प्रकार हज़रत मुस्लेह मौऊद में देखीं, उनका वर्णन करता हूँ। हज़रत मुस्लेह मौऊद के निधन के समय हज़रत सय्यद अबुल फर्श अलहस्नी दमिश्क बयान करते हैं कि- हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ीयल्लाहु अन्हु के निधन से हमारे दिलों को बड़ा खेद एवं शोक हुआ तथा यह वह खेद है जिसने प्रत्येक अहमदी पर बड़ा भारी प्रभाव किया। दमिश्क की जमाअत को विशेष रूप से अत्यंत शोक एवं खेद हुआ है क्यूँकि दमिश्क की जमाअत हुज़ूर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के हाथों का लगाया हुआ पौधा है जिसको आपके मुबारक हाथों ने ही लगाया था तथा उसको आपकी विशेष रूहानियत और ध्यान ने सींचा था। अत: यह पौधा फला और फूला है। अल्लाह तआला ने आपके बारे में सत्य फरमाया था कि "क़ौमें उससे बरकत पाएंगी" हमने आपकी दुआ की बरकत और तवज्जो से अल्लाह का फैज़ प्राप्त किया। लिखते हैं कि मुझे अच्छी तरह से याद है कि जब कभी भी हुज़ूर राज़िअल्लाह अन्हु से दुआ का निवेदन किया तो मैंने उस की कुबूलियत के लक्षण रूहानी और भौतिक दृष्टिकोण से स्पष्ट रूप से अनुभव किए और ख़ुदा की वह्यी आपके बारे में बिल्कुल सच्ची है " नूर आता है नूर, जिसको ख़ुदा ने अपनी इच्छा के इत्र से सुगंधित किया है।"

(अल्फ़ज़ल क़ादियान जिल्द 55/20 नंबर 10 तिथि 12 जनवरी 1966 ई पृष्ठ-5)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पेशगोई की सच्चाई की अभिव्यक्ति अल्लाह तआला ने गैरों से भी कराई अत: एक मान्यवर गैर अहमदी आलिम मौलवी समीउल्लाह खान साहब फारूकी ने पाकिस्तान की स्थापना से पहले इज़हार-ए-हक के शीर्षक से एक ट्रैक्ट में लिखा- आपको अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सूचना मिलती है कि "मैं तेरी जमाअत के लिए तेरे वंश में से एक व्यक्ति को स्थापित करूँगा तथा उसको अपनी निकटता तथा वह्यी के द्वारा विशिष्ट करूँगा तथा उसके माध्यम से सत्य की उन्नति होगी तथा बहुत से लोग सच्चाई को स्वीकार करेंगे। लिखते हैं कि इस पेशगोई को पढ़ो तथा बार बार पढ़ो और फिर ईमान से कहो कि क्या यह पेशगोई पूरी नहीं हुई। जिस समय यह पेशगोई की गई है उस समय वर्तमान ख़लीफ़ा अभी बच्चे ही थे तथा मिर्ज़ा साहब की ओर से उन्हें ख़लीफ़ा नियुक्त करने के लिए किसी प्रकार की वसीयत भी न की गई थी बल्कि खिलाफत का चयन सर्व सम्मति पर छोड़ दिया गया था। अत: उस समय अधिकांश लागों ने हकीम नूरुद्दीन साहब को ख़लीफ़ा स्वीकार कर लिया जिसपर विरोधियों ने पेशगोई पर उपहास किया (हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल बने तो पेशगोई का मज़ाक उड़ाया कि देखो कहते थे बेटा होगा, बेटा तो बना नहीं) किन्तु हकीम साहब के निधन के बाद मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़ा नियुक्त हुए। (यह ग़ैर अहमदी लिख रहे हैं, अहमदी नहीं हैं) और यह वास्तविकता है कि आपके युग में अहमदियत ने जितनी अधिक प्रगति की वह अद्‌भुत है। स्वयं मिर्ज़ा साहिब के समय में अहमदियों की संख्या बहुत थोड़ी थी ख़लीफा नूरुद्दीन साहिब के समय में भी विशेष उन्नति न हुई थी लेकिन वर्तमान ख़लीफा के समय में मिर्ज़ाइयत लगभग दुनिया के हर कोने में पहुँच गई है और हालात यह बताते हैं कि आइन्दा जनगणना में मिर्ज़ाइयों कि संख्या 1931 ई की अपेक्षा दोगुनी से भी अधिक होगी। और हाल यह है कि इस बीच में विरोधियों की ओर से मिर्ज़ाइयत को मिटाने के लिए जितने सुनियोजित रूप से यत्न हुए हैं पहले कभी नहीं हुए थे। लिखते हैं कि अतएव आपकी औलाद में से एक व्यक्ति भविषवाणी के अनुसार जमाअत के लिए कायम किया गया। और उसके द्वारा जमाअत को आश्चर्यजनक उन्नति हुई जिससे स्पष्ट होता है कि मिर्ज़ा साहब की यह पेशगोई सम्पूर्ण रूप से पूरी हुई।

फिर हिन्दुस्तान के एक गैर मुस्लिम सिख पत्रकार अर्जुन सिंह, रंगीन समाचार पत्र के सम्पादक ने स्वीकार किया, कहते हैं मिर्ज़ा साहब ने 1901 ई में जबकि मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब वर्तमान ख़लीफ़ा अभी बच्चे ही थे, यह पेशगोई की थी कि-

बिशारत दी कि इक बेटा है तेरा, जो होगा एक दिन महबूब मेरा
करूँगा दूर उस मह से अंधेरा, दिखाऊँगा कि इक आलम को फेरा
बिशारत क्या है इक दिल की गिज़ा दी, फसुब्हानल्लज़ी अखज़ल अआदी

लिखते हैं कि "यह पेशगोई नि:सन्देह हैरत (अचरज) पैदा करने वाली है। 1901 ई में न मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद कोई बड़े विद्वान थे तथा न आपकी राजनैतिक योग्यता के जोहर खुले थे। उस समय यह कहना कि तेरा एक बेटा ऐसा और ऐसा होगा, अवश्य किसी आध्यात्मिक शक्ति का प्रमाण है। यह कहा जा सकता है कि चूँकि मिर्ज़ा साहब ने एक दावा करके गद्‌दी की आधारशिला रख दी थी इस कारण से आपकी यह धारणा हो सकती थी कि मेरे बाद मेरी गददी का सेहरा मेरे लड़के के सिर पर होगा। परन्तु यह विचार अनुचित है इसलिए कि मिर्ज़ा साहब ने खिलाफत की शर्त नहीं रखी कि वे अवश्य मिर्ज़ा साहब के वंश से तथा आपकी संतान से हो। अत: ख़लीफ़ा अव्वल एक ऐसे साहब हुए जिनका मिर्ज़ा साहब के परिवार से कोई सम्बंध नहीं था। फिर यह भी सम्भव था कि मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहब ख़लीफ़ा अव्वल के बाद भी कोई अन्य ख़लीफ़ा हो जाते। अत: इस अवसर पर भी मौलवी मुहम्मद अली साहब अमीर जमाअत लाहौर खिलाफत के अभिलाषी थे किन्तु अधिकांश लोगों ने मिर्ज़ा बशीरुद्दीन साहब का साथ दिया तथा इस प्रकार आप ख़लीफ़ा नियुक्त हुए। लिखते हैं यह- कि अब प्रश्न यह है कि यदि बड़े मिर्ज़ा साहब के अन्दर कोई दिव्य शक्ति काम नहीं कर रही थी तो फिर आप यह किस प्रकार जान गए कि मेरा एक बेटा ऐसा होगा। जिस समय मिर्ज़ा साहब ने उपरोक्त घोषणा की है उस समय आपके तीन बेटे थे, आप तीनों के लिए दुआएँ भी करते थे किन्तु पेशगोई केवल एक के बारे में है और हम देखते हैं कि वास्तव में ऐसा प्रमाण मिला कि उसने एक विश्व में बदलाव पैदा कर दिया।"

(तारीख़ अहमदियत जिल्द 1 पृष्ठ 286-288, मुद्रित क़ादियान 2007 ई)

उस समय के जो जमाअती हालात थे और उस समय जो सांसारिक माध्यम जमाअत के पास थे वे आज की भांति नहीं थे। यद्यपि आज भी हमारे पास हर प्रकार के माध्यम नहीं हैं लेकिन फिर भी उन हालात से बहुत बेहतर हैं लेकिन उन हालात में भी अल्लाह तआला की सहायता से दुनिया के 50 से अधिक देशों में अहम दियत का पौधा लगा, जमाअतें कायम हुईं और लगभग हर महाद्वीप में जमाअत क़ायम हुई। यह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि की भविष्यवाणी के अनुसार इस्लाम का फैलना और आपकी दृढ़ संकल्प का परिणाम था।

फिर मौऊद बेटे के जन्म का उद्देश्य यह था कि दीन-ए-इस्लाम की प्रतिष्ठा तथा अल्लाह के कलाम की श्रेष्टता लोगों पर प्रकट हो। भारत पाक के विख्यात मुस्लिम लीडर तथा कवि मौलवी ज़फर अली खान साहब सम्पादक ज़मींदार अखबार ने स्पष्ट शब्दों में स्वीकार करते हुए अपने लोगों से कहा कि कान खोल कर सुन लो कि तुम और तुम्हारे लगे बन्धे मिर्ज़ा महमूद का मुकाबला कयामत नहीं कर सकते। मिर्ज़ा महमूद के पास क़ुरआन है और क़ुरआन का ज्ञान है, तुम्हारे पास क्या धरा है?.... तुमने कभी सपने में भी क़ुरआन नहीं पढ़ा.... मिर्ज़ा महमूद के पास ऐसी जमाअत है जो तन मन धन से उसके इशारे पर, उसके पाँव पर निछावर होने को तय्यार है..... मिर्ज़ा महमूद के पास मुबल्लिग हैं विभिन्न विद्याओं के निपुण लोग हैं विश्व के प्रत्येक देश में उसने झंडा गाड़ रखा है।

(तारीख़ अहमदियत जिल्द 1 पृष्ठ 288, मुद्रित क़ादियान 2007 ई)

मौऊद बेटे के बारे में अल्लाह तआला का वादा था कि वह 'दृढ़ संकल्प' होगा साथ ही यह कि वह बाह्य एवं आंतरिक ज्ञान से परिपूर्ण किया जाएगा। अत: हिंदुस्तान के प्रख्यात सूफी ख्वाजा हसन निज़ामी देहलवी ने आपकी कलमी तस्वीर खींचते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह अन्हु के बारे में लिखा है कि अधिकतर बीमार रहते हैं परंतु बीमारियां उनके व्यवहारिक कर्मठता में रुकावट नहीं डाल सकती। उन्होंने मुखालिफ़त (विरोध) की आंधियों में शांतिपूर्वक ढंग से काम करके अपनी मुगली जवां मर्दी को सिद्ध कर दिया और यह भी कि मुगल जाति काम करने की विशेष प्रतिभा रखती है। राजनैतिक समझ भी रखते हैं और धार्मिक बुद्धि एवं विवेक में भी मज़बूत हैं और युद्ध कौशल भी जानते हैं अर्थात मानसिक और लेखन संबंधी जंग में निपुण हैं।

(तारीख अहमदियत जिल्द 1 पृष्ठ 288)

मौऊद बेटे के बारे में एक महत्वपूर्ण ख़बर दी गई थी कि वह असीरों की रुस्तगारी का मूजिब होगा (अर्थात कैदियों की रिहाई का कारण होगा) यह भविष्यवाणी भी विभिन्न दृष्टिकोणों से पूरी होती रही और इस प्रकार भी पूरी होती है कि इंसानी अक्ल को आश्चर्यचकित कर देती है। आजादी-ए-कश्मीर की तहरीक़ इसकी गवाह है क्योंकि इस तहरीक को सफल बनाने का सेहरा ऑल इंडिया कश्मीर कमेटी के सर है। और यह प्रसिद्ध कमेटी हज़रत मुस्लेह मौऊद की तहरीक़ पर और हिंदुस्तान-पाकिस्तान के बड़े-बड़े मुस्लिम ज़ोमा उदाहरणतया सर ज़ुल्फिकार अली खान, डॉक्टर सर मुहम्मद इकबाल, ख्वाजा हसन निज़ामी देहलवी, सैयद हबीब 'अख़बार सियासत' के संपादक आदि के परामर्श से 25 जुलाई 1931 को शिमला में स्थापित हुई और इसकी अध्यक्षता स्वयं हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी को सौंपी गई। आपकी सफल क़यादत का परिणाम यह हुआ कि कश्मीर के मुसलमान जो लंबे समय से इंसानियत के अधिकारों से वंचित होकर गुलामी का जीवन व्यतीत कर रहे थे एक अत्यंत कम समय सीमा में स्वतंत्रता के वातावरण में सांस लेने लगे। उनके राजनीतिक एवं सामाजिक अधिकार स्वीकार किए गए। रियासत में पहली बार असेंबली स्थापित हुई और भाषण एवं लेखन की स्वतंत्रता के साथ उन्हें इसमें उचित प्रतिनिधित्व मिला जिस पर मुस्लिम प्रेस ने हज़रत मुस्लेह मौऊद के शानदार कारनामों का इक़रार करते हुए आपको बधाई देते हुए यहां तक लिखा कि जिस ज़माने में कश्मीर की हालत नाज़ुक थी और उस ज़माने में जिन लोगों ने आस्थाओं के मतभेद के बावजूद मिर्ज़ा साहब का अध्यक्ष के रूप में चयन किया था उन्होंने काम की सफलता को दृष्टिगत रखते हुए बेहतरीन चयन किया था। उस समय यदि आस्था के मतभेद के कारण मिर्ज़ा साहब का चयन न किया जाता तो तहरीक पूर्णतया नाकाम रहती और इस दयनीय उम्मत को बहुत नुकसान पहुंचता।

(तारीख अहमियत जिल्द 1 प्रथम पृष्ठ 289 मुद्रित क़ादियान 2007 ई)

मौलाना मोहम्मद अली जोहर साहिब ने (यह बहुत बड़े राजनीतिज्ञ भी थे, विद्वान भी थे) अपने अख़बार हमदर्द 26 सितंबर 1927 ई में लिखा कि "नाशुक्री होगी कि जनाब मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद और उनकी इस सुसंगठित जमाअत का वर्णन इन पंक्तियों में न करें जिन्होंने अपने पूर्ण प्रयास, आस्था के मतभेद को ध्यान में न लाते हुए समस्त मुसलमानों की भलाई के लिए, समर्पित कर दिए हैं। ये लोग इस समय अगर एक ओर मुसलमानों की सियासत में दिलचस्पी ले रहे हैं तो दूसरी ओर मुसलमानों की व्यवस्था, प्रचार एवं व्यापार में भी प्रयत्नरत हैं। और वह समय दूर नहीं जबकि इस सुसंगठित संप्रदाय का तौर तरीका सवादे आज़म इस्लाम के लिए सामान्यता और उन लोगों के लिए विशेषत: जो बिस्मिल्लाह के गुंबदों में बैठकर इस्लाम की सेवा के दावे करते हैं, मार्ग दर्शक सिद्ध होगा।

(महानामा ख़ालिद सय्यदना मुस्लेह मौऊद नंबर, जून जुलाई 2008 पृष्ठ 320-321)

उन्होंने कहा मौलवी केवल मिम्बरों पर बैठे बातें करते हैं और यह लोग काम करते हैं।

फिर एक क़ुरआन के विख्यात टीकाकार अल्लामा अब्दुल माजिद दरयाबादी, सिद्क़-ए-जदीद के सम्पादक ने हज़रत मुस्लेह मौऊद के निधन पर एक लेख लिखा जिसमें हज़रत मुस्लेह मौऊद की क़ुरआन की सेवा को श्रद्धांजलि पेश करते हुए लिखते हैं कि क़ुरआन तथा क़ुरआन के ज्ञान का विश्व्यापी प्रकाशन तथा इस्लाम की वैभव शाली तबलीग में उन्होंने जो प्रयास, अग्रसरता तथा दृढ़ निश्चय से अपनी लम्बी आयु में जारी रखा उनका अल्लाह तआला उन्हें प्रतिफल प्रदान करे। ज्ञान की दृष्टि से क़ुरआन के लौकिक ब्रह्मज्ञान की जो व्याख्या तथा स्पष्टीकरण एवं तर्जुमानी वे कर गए हैं उसका भी एक बुलन्द एवं विशेष स्तर है।

(सिद्क़े जदीद लखनऊ 18 नवम्बर 1965, सवानेह फ़ज़ले उमरजिल्द 3 पृष्ठ 168)

एक अमरीकी पादरी एक बार क़ादियान आया। यह भी आन्तरिक एवं बाह्य ज्ञान से परिपूर्ण किए जाने का उदाहरण है 1914 ई की बात है उसने कुछ अहमदियों के सामने कुछ धार्मिक प्रश्न प्रस्तुत किए जो अत्यंत महत्वपूर्ण थे और साथ ही यह भी कहा कि मैं यहाँ अमरीका से चल कर यहाँ तक आया हूँ और मैंने कई उलमा के सामने यह प्रश्न किए हैं परन्तु इन प्रश्नों के संतुष्टि जनक उत्तर नहीं मिल सके। मैं यहाँ इन प्रश्नों को आपके ख़लीफा के सामने प्रस्तुत करने आया हूँ देखता हूँ कि वे क्या उत्तर देते हैं। मौलवी उमरदीन शिमोली साहिब वर्णन करते हैं कि वे प्रश्न इतने उलझे हुए और विचित्र थे कि उन्हें सुनकर मुझे विश्वास हो गया कि हज़रत साहिब अभी बिल्कुल नौजवान हैं और इलाहियात की कोई नियमित शिक्षा भी प्राप्त नहीं की आयु भी छोटी है और परिचय भी बहुत कम है, वे इन प्रश्नों के उत्तर कदापि नहीं दे पाएंगे और इस प्रकार सिलसिला अहमदिया कि बड़ी बदनामी होगी (सम्पूर्ण संसार में बदनामी हो जाएगी) क्योंकि जब हज़रत साहिब उसके प्रश्नों के उत्तर न दे सकेंगे तो यह अमरीकन पादरी वापस जाकर समस्त संसार में इस बात का प्रापगंडा करेगा कि अहमदियों का ख़लीफा कुछ भी नहीं जानता और ईसाइयत के मुकाबले में कदापि नहीं ठहर सकता। और केवल नाम का खलीफा है और ज्ञान कुछ भी नहीं रखता" (यह मौलवी साहिब का विचार था तो कहते हैं) "इस अवस्था में मैं काफी परेशान हुआ और मैंने यह कोशिश की कि वह पादरी हज़रत साहिब से न मिले और वैसे ही वापस चला जाए परन्तु मैं इस कोशिश में नाकाम रहा, वह इस बात पर दृढ़ था कि मैंने अवश्य मिलकर जाना है। कहते हैं मजबूर हो कर मैं हज़रत साहिब के पास गया बताया कि अमरीकन पादरी आया है और कुछ प्रश्न करना चाहता है, अब क्या करें? इस पर हज़रत साहिब ने अविलम्ब फ़रमाया तो बुला लो उसे। कहते हैं बहरहाल मैं उसको लेकर उपस्थित हो गया।उन दोनों के मध्य अनुवादक मैं ही था। कहते हैं अमरीकन पादरी ने कुछ सामान्य वार्तालाप करने के बाद अपने प्रश्न हज़रत साहिब के सेवा में प्रस्तुत किए जिनका अनुवाद मैंने आपको सुना दिया। और हज़रत मुस्लेह मौऊद अत्यंत धैर्यपूर्वक उन समस्त प्रश्नों को सुना और फिर तुरंत उनके ऐसे संतुष्ट करने वाले उत्तर दिए कि मैं सुनकर हैरान हो गया। मुझे कदापि विश्वास न था कि इन प्रश्नों के हज़रत साहिब विवेकसम्मत और अद्वतीय उत्तर दे सकेंगे। जब मैंने यह उत्तर अंग्रेज़ी में अमरीकन पादरी को सुनाए तो वह भी हैरान हो गया और कहने लगा कि मैंने आज तक ऐसी बौद्धिक वार्तालाप और ऐसा तर्कसंगत व्याख्यान किसी के मुंह से नहीं सुना। ज्ञात होता है तुम्हारा ख़लीफा बहुत बड़ा स्कॉलर है और संसार के धर्मों पर उसकी नज़र बहुत गहरी है। यह कह कर

उसने बड़े सम्मान पूर्वक हज़रत साहिब के हाथ को चूमा और वापस चला गया।

(माहनामा खालिद सय्यदना मुस्लेह मौऊद नंबर, जून जुलाई 2008 ई पृष्ट 319-320)

फरवरी 1945 ई में हज़रत मुस्लेह मौऊद ने अहमदिया हस्पताल लाहौर में इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था शीर्षक पर एक भव्य सम्बोधन किया। सांसारिक ज्ञान का भी उनको विशेष सामर्थ्य था। लैक्चर के बाद जलसे के सदर जनाब लाला रामचन्द मंचन्दा साहब ने संक्षिप्त सम्बोधन किया जिसमें उन्होंने कहा कि "मैं अपने आपको भाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे एक मूल्यवान तकरीर सुनने का अवसर मिला। मुझे इस बात की ख़ुशी है कि तहरीक अहमदियत उन्नति कर रही है और विशेष उन्नति कर रही है। जो तकरीर इस समय आप लोगों ने सुनी है उसमें अत्यंत मूल्यवान तथा नई नई बातें हुज़ूर ने बयान फरमाई हैं। मुझे इस तकरीर से बड़ा लाभ प्राप्त हुआ है और मैं समझता हूँ कि आप लोगों ने भी इन मुल्यवान विद्याओं से लाभ उठाया होगा।

मुझे इस बात कि बहुत ख़ुशी हुई है कि इस जलसा में न केवल मुसलमान बल्कि ग़ैर मुस्लिम भी शामिल हुए हैं और मुझे ख़ुशी हुई है कि मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों के संबंध अच्छे हो रहे हैं। जमाअत अहमदिया के न्बहुत से सम्माननीय मित्रों से मुझे वार्तालाप करने का अवसर मिलता रहता है यह जमाअत इस्लाम कि वह व्याख्या करती है जो इस देश के लिए अत्यंत लाभकारी है। पहले तो मैं समझता था और मेरी ग़लती थी कि इस्लाम केवल अपने नियमों में मुसलमानों का ही ध्यान रखता है ग़ैर मुस्लिमों का कोई लिहाज़ नहीं रखता। परन्तु आज हज़रत इमाम जमाअत अहमदिया के भाषण से मालूम हुआ है कि इस्लाम समस्त धर्मों के मध्य समानता की शिक्षा देता है और मुझे यह सुन कर बहुत ख़ुशी हुई है और मैं अपने ग़ैर मुस्लिम दोस्तों से कहूँगा इस प्रकार के इस्लाम का सम्मान करने में आप लोगों को क्या परेशानी है? आप लोगों जिस गंभीरता और धैर्यपूर्वक ढाई घंटे तक हुज़ूर का भाषण सुना है अगर कोई योरोपियन इसे देखता तो हैरान होता कि भारत ने इतनी उन्नति कर ली है। जहाँ मैं आप लोगों का धन्यवाद करता हूँ (इस बात पर) कि आप लोगों ने शांति के साथ भाषण को सुना वहां मैं अपनी ओर से तथा आप सबकी ओर से हज़रत इमाम जमाअत अहमदिया का बार बार और लाख लाख शुक्रिया अदा करता हूँ कि उन्होंने अपने बड़े ज्ञान से परिपूर्ण सम्बोधन से हमें लाभान्वित किया।

(तारीख़ अहमदियत जिल्द 10 पृष्ठ 495-496, मुद्रित क़ादियान 2007 ई)

जनाब अखतर ओरेनवी साहब (एम ए उर्दू विभाग अध्यक्ष, पटना यूनीवर्सिटी) प्रोफ़ेसर अब्दुल मन्नान बेदिल साहिब (पूर्व अध्यक्ष फ़ारसी विभाग) के तफसीर कबीर के बारे में अपना एक आँखों देखा वृतांत वर्णन करते हैं। कहते हैं कि मैंने एक के बाद एक हज़रत ख़लीफा सानी की तफसीर-ए-कबीर की कुछ जिल्दें प्रोफेसर अब्दुल मन्नान बेदिल साहब, भूत पूर्व अध्यक्ष पटना कॉलिज फारसी विभाग की सेवा में पेश कीं तथा वे उन तफसीरों को पढ़ कर इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मदर्सा अर्बिय्या शम्सुल हुदा पटना के अध्यापकों को भी तफसीर की कुछ जिल्दें पढने के लिए दीं तथा एक दिन कई अध्यापकों को बुलवाकर उन्होंने उनके विचार मालूम किए। एक ने कहा कि फारसी तफसीरों में ऐसी तफसीर नहीं मिलती। प्रोफैसर अब्दुल मन्नान साहब ने पूछा कि अर्बी तफसीरों के विषय में क्या विचार है। अध्यापक चुप रहे, कुछ विलम्ब के पश्चात उनमें से एक ने कहा कि पटना में सारी अर्बी तफसीरें मिलती नहीं हैं। मिस्र और शाम की सारी तफसीरों के बाद ही उचित टिप्पणी की जा सकती है। प्रोफैसर साहब ने पुरानी अर्बी तफसीरों पर चर्चा आरम्भ की तथा फरमाया कि मिर्ज़ा महमूद की तफसीर के स्तर की एक तफसीर भी किसी भाषा में नहीं मिलती। आप नवीन तफसीरें भी मिस्र और शाम से मंगवा लीजिए तथा कुछ महीनों के बाद मुझसे बातें कीजिए। अर्बी और फारसी के विद्वान चकित रह गए।

(तारीख़ अहमदियत जिल्द 9 पृष्ठ 158-159, मुद्रित क़ादियान 2007 ई)

कुरैशी अब्दुर रहमान साहिब सिखर हुज़ूर के जादूई ज्ञानमय व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए कि हुज़ूर के सिखर में रहने के दौरान सब दोस्त अपने ग़ैर जमाअती दोस्तों को मिलाने लाते थे। मैं एक दोस्त को जो अधिकतर अपने ज्ञान की डींगें मारते थे, मिलाने लाया। हुज़ूर मज्लिश में बैठे हुए थे, दोस्त कुछ प्रश्न करते थे हुज़ूर उत्तर देते थे परन्तु वह व्यक्ति आरम्भ से अंत तक चुप ही रहा। जब सभा समाप्त हुई तो मैंने उससे पूछा कि आपने कोई प्रश्न नहीं किया। उसने तुरंत कहा कि यहाँ बोलने का अर्थ तो स्वयं की पोल खुलवाने (अपमानित कराने) वाली बात थी। वह अत्यंत विरोधी था परन्तु हुज़ूर का वार्तालाप इतना प्रभावित करने वाला था कि कि उसने कहा कि मैं तो यही समझता रहा कि मैं यहाँ से अपना ईमान सुरक्षित ले जाऊं तो बड़ी बात है" प्रश्न करना तो दूर की बात है।

(उद्धृत सवानेह फ़ज़्ल-ए-उमर जिल्द 5 पृष्ठ 553)

एक साप्ताहिक समाचार पत्र "पारस" के सम्पादक लाला करमचन्द कुछ पत्रकारों के साथ क़ादियान गए और हुज़र रज़ीयल्लाहु अन्हु से बड़े प्रभावित होकर वापस आए तथा अपने अख़बार में इसके विषय में निबन्ध भी लिखे। उनका कहना था कि हम तो ज़फरुल्लाह खान को बड़ा आदमी समझते थे किन्तु मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद के सामने उसका स्तर एक तिफ़्ले मकतब (स्कूली बच्चे) का है। वे प्रत्येक बात में उससे अच्छा विचार रखते हैं तथा उत्तम तर्क प्रस्तुत करते हैं। उनमें अत्यंत संगठन कौशल है, ऐसा व्यक्ति सरलता पूर्वक किसी राज्य को प्रगति की चरम सीमा तक ले जा सकता है।

(उद्धृत सवानेह फ़ज़्ल-ए-उमर जिल्द 5 पृष्ठ 558)

एक ज्ञान में रुचि रखने वाले बुज़ुर्ग जलसा सालाना क़ादियान में शामिल हुए उन्होंने हज़रत मुस्लेह मौऊद तथा आपके अनुयायिओं के विषय में अपने अनुभव बयान किए। कहते हैं कि मैंने एक और बात जिसे ध्यान पूर्वक देखा वह यह थी कि सारा गिरोह, सारा सिलसिला, सारा समूह, सारा समाज उस पवित्र आत्मा ख़लीफ़ा की एक छोटी उंगली के इशारे पर चल रहा था। हज़रत इमाम जमाअत अहमदिया के विषय में इस निषकर्ष पर पहुंचा हूँ कि यह व्यक्ति कलम का धनी भी है, तकरीर की उच्च श्रेणी का स्वामी भी है तथा संगठन का उच्च कोटि का गवर्नर भी है।

(उद्धृत सवानेह फ़ज़्ल-ए-उमर जिल्द 5 पृष्ठ 538)

अल्लामा नियाज़ फतहपुरी साहिब तफ़सीर-ए-कबीर जिल्द तृतीय के अध्ययन के बाद लिखते हैं कि तफसीर कबीर जिल्द त्रेइतित आजकल मेरे सामने है और मैं उसे बड़ी गहरी नज़र से देख रहा हूँ इसमें संदेह नहीं कि क़ुरआन ने अध्ययन का एक बिल्कुल नया चिंतन का पहलु आपने पैदा किया है और यह तफसीर अपनी विशेषता के दृष्टिकोण से प्रथाम तफसीर है जिसमें बुद्धि और क़ुरआन को बड़ी सुन्दरता के साथ एक साथ कर दिया गया है। आपके ज्ञान रुपी समुद्र, आपका व्यापक दृष्टिकोण, आपका महान चिंता एवं विवेक, आपका तार्किक सौन्दर्य आप के एक-एक शब्द से स्पष्ट नज़र आता है और मुझे अफ़सोस है कि मैं क्यों इस समय तक इससे अज्ञानी रहा। काश कि मैं इसकी समस्त जिल्दें देख सकता। कल सूर: हूद की तफ़सीर में हज़रत लूत अलैहिस्सलाम पर आपके विचार मालूम करके जी भड़क उठा और यह लिखने पर विवश हो गया। आपने "हाउलाए बनाती" की तफसीर करते हुए सामान्य मुफस्सिरीन (व्याख्याकारों) से अलग जो बहस का पहलु अपनाया है उसकी दाद देना मेरे बस में नहीं, ख़ुदा आपको लम्बी आयु प्रदान करे।

(उद्धृत तफसीर कबीर जिल्द 7 परिचय)

अत: अपनों और गैरों के हज़रत मुस्लेह मौऊद के बारे में ये विचार हैं वह आपसे मिल कर आपके व्यक्तित्व का जो गहरा प्रभाव उन पर होता था और आपकी विशेषताओं का जब ज्ञान होता था वह प्रत्येक को हैरत में डाल देता था। पेशगोई के सत्यापन की यह खुली अभिव्यक्ति है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फरमाया- आज कल जो जलसे हो रहे हैं उनमें पेशगोई पर चर्चा तथा आपके प्रतिष्ठा पूर्ण कार्यों की बातें सुनकर जहाँ हमें हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु के दर्जे बढ़ते चले जाने के लिए दुआएँ करनी चाहिएँ वहाँ अपनी हालतों का निरीक्षण भी करना चाहिए कि अहमदियत की उन्नति के लिए एक उत्साह के साथ जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सम्पूर्ण प्रतिभाओं को निखारने तथा उपयोग करने की आवश्यकता है। यदि हम यह करेंगे तो हम अहमदियत की प्रगति को अपने जीवन में पहले से बढ़कर पूरा होते देखेंगे। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

जलसा सालाना ब्रिटेन 2017 ई के अवसर पर सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ की व्यस्तता (भाग -1)

☆ हुज़ूर अनवर को मैं एक महान व्यक्ति समझता हूं जिन की बुद्धिमत्ता बहुत व्यापक है।

जमाअत अहमदिया कुरआन की शिक्षाओं की तरफ लोगों को बुला रही है जिसने मुझे बेहद प्रभावित किया है, जमाअत अहमदिया के ख़लीफा के साथ मुलाकात का भी एक गहरा प्रभाव है, दुनिया की कठिन समस्याओं का समाधान ख़लीफा बहुत ही आसान और सरल शब्दों मैं वर्णन कर देते हैं। (ग्रीक पत्रकार महिला सोफिया साहिबा)

जलसा पर हम ने इस्लाम का ऐसा चेहरा देखा जिसे अब तक हम अनदेखा कर रहे थे। यह बात स्पष्ट हो गई है कि इस्लाम का संदेश शांति, सहिष्णुता, प्रेम का है और दूसरों के लिए भी, बावजूद धार्मिक मतभेद के, आप का आतिथ्य और प्यार के कारण मैं बहुत धन्यवादी हूं।

(पार्लेयिमेन्ट प्रतिनिधि उरुग्वे डॉ गारोडो अमारिला)

जमाअत अहमदिया की सोच बहुत उदार है जमाअत अहमदिया के कारण इस्लाम का असल रुख़ लोगों के सामने आ रहा है जो कि उच्च नैतिक मूल्यों, भाईचारे और हर प्रकार के चरमपंथ के ख़िलाफ जिहाद की शिक्षा पर आधारित है।

(स्पेन से सम्बन्ध ऱखने वाली रिपार्टर राफेल साहिबा)

मेरी इस यात्रा का सबसे अच्छा क्षण इमाम जमाअत अहमदिया इमाम अली से मिलना था विश्वास एक महान नेता और बहुत बुद्धिमान व्यक्ति है

(ओकिनावा साहिब के आयरलैंड संसदीय सदस्य)

जमाअत अहमदिया की यह बात भी मुझे बहुत अच्छी लगी कि वह हर प्रकार का सवाल सुनने के लिए तैयार रहती है और किसी भी समस्या से भागती नहीं बल्कि सभी प्रकार की समस्या का जवाब देती है।

(आयरलैंड के एक सीनेटर)

मुझे अपने निकटवर्तियों से भी अधिक अहमदियों से मुहब्बत मिलती है मैं हुज़ूर को एक महान व्यक्ति समझता हूं जिनकी बुद्दिमत्ता बहुत व्यापक है और उनके साथ कुछ क्षणों व्यतीत करने के बाद मैं समझ सकता हूँ कि अहमदी क्यों अपने ख़लीफा से इतना प्यार करते हैं।

(कफ़न मसीह के प्रसिद्ध शोधकर्ता एम शॉवट्र्स साहिब)

जलसा में सम्मिलित होने वाले सम्मानित सदस्यों के ईमान वर्धक विचार

दुनिया के विभिन्न देशों से जलसा में शामिल होने वाले प्रतिनिधियों की हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकातें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ की इन दिनों में असामान्य व्यस्तता का संक्षिप्त उल्लेख

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

जलसा सालाना हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रामाणिकता का एक जबरदस्त और चिरस्थायी निशान है। 1891 ई में जब जलसा सालाना की नींव रखी गई तो हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से ख़बर पाकर यह घोषणा फरमाई थी की "इस जलसा को मामूली इंसानी जलसों की तरह विचार न करें। यह वह बात है जिसकी विशुद्ध रूप से अल्लाह तआला के समर्थन और इस्लाम की विजय पर बुनियाद है। इस सिलसिले की बुनियादी ईंट अल्लाह तआला ने अपने हाथ से रखी है और इसके लिए क़ौमें तय्यार की हैं जो जल्द ही इसमें आ मिलेंगी क्योंकि यह उस सर्वशक्तिमान का कार्य है जिसके आगे कोई बात अनहोनी नहीं।"

यह घोषणा ऐसे समय में किया गया जब कि भारत में केवल कुछ गिनती के लोग जमाअत अहमदिया में शामिल थे। पहले जलसा में, केवल 75 लोग शामिल हुए थे। फिर संख्या धीरे-धीरे बढ़ती गई। 1983 ई में रब्बा में आयोजित होने वाले अन्तिम जलसा में 2 लाख 50 हज़ार से अधिक लोगों ने भाग लिया।

1984 ई में पाकिस्तान से हिजरत के बाद यह जलसा लंदन में आयोजित हो रहे हैं और लंदन का जलसा ख़लीफतुल मसीह की यहाँ उपस्थिति और भागीदारी की वजह से एक केंद्रीय स्थान धारण कर चुका है।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से खबर पाकर जो घोषणा फरमाई थी कि अल्लाह तआला ने इस सिलिसला के लिए क़ौमें तैय्यार की हैं जो जल्द ही इस में आ मिलेंगी वह आज बड़ी शान से इस जलसा सालाना में पूरी हो रही है। अल्लाह तआला की कृपा से यू.के के जलसा सालाना पर हर साल दुनिया के विभिन्न देशों से विभिन्न जातियों से संबंध रखने वाले लोग गिरोह दर गिरोह आते हैं। अफ्रीका महाद्वीप हो या अमेरिका, यूरोप या एशिया, ऑस्ट्रेलिया हो या द्वीप के देशों के हूँ हर जगह के प्रतिनिधि बड़ा लंबा और दूर का सफर तय करके जलसा में शामिल होते हैं। इन देशों से आने वाले प्रतिनिधियों में एक बड़ी संख्या ऐसे मेहमानों होती है जो अब तक अहमदियत में प्रवेश नहीं हुए होते।

इन में विभिन्न देशों के वज़ीर मेमबरान संसद, विभिन्न देशों एम्बसीज़ के प्रतिनिधि, पैरामाउंट प्रमुखों, न्यायाधीश, वरिष्ठ वकील, विभिन्न देशों के राष्ट्रीय मीडिया और प्रेस के प्रतिनिधि, पत्रकार, विभिन्न संगठनों और सोसाइटियों और संस्थाओं के प्रमुख, विभिन्न धर्मों के अग्रणी व्यक्ति, विश्वविद्यालय कॉलेजों के प्रिंसिपल्सज़, उप चांसलरज़, प्रोफेसर और अन्य मेहमान शामिल होते हैं।

जहां ये लोग जलसा सालाना के कार्यक्रमों और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के भाषणों से लाभान्वित होते हैं वहाँ यह सब हज़रत अमीरूल मोमिनीन अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज से मुलाकात की सआदत भी पाते हैं और ये मुलाकात उनके अंदर एक असामान्य परिवर्तन का कारण बनती है और उन पर गहरा प्रभाव छोड़ती है, जिस का ये लोग स्पष्ट शब्दों में बाद में अभिव्यक्ति भी करते हैं।

इसलिए इस साल भी दुनिया के विभिन्न देशों से विभिन्न क़ौमों से संबंधित मेहमानों के दल जलसा में शामिल हुए और जलसा के कार्यक्रमों में शामिल होने के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकात की सआदत भी प्राप्त की। प्रतिनिधिमंडलों से मुलाकातों का यह कार्यक्रम जलसा सालाना के दूसरे दिन शनिवार को 29 जुलाई की शाम को हदीकतुल महदी में ही शुरू हो गया था जलसा के कई दिन बाद तक जारी रहा।

कार्यक्रम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ 7 बजकर 45 मिनट पर अपने कार्यालय आए।

ग्रीस के प्रतिनिधि मंडल की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

सबसे पहले, ग्रीस देश से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। ग्रीस से चार लोगों पर आधारित प्रतिनिधिमंडल आया था।

* एक पत्रकार महिला Sofia Papadopoulou सोफिया पापदोपोलू

साहिबा ने सवाल किया कि शांति का संदेश फैलाना कितना मुश्किल है?

इस के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "हमारा काम तो मिशनरी काम है। इस्लाम की तब्लीग़ है और इस्लाम के अमन के सन्देश को फैलाना है और हम यह काम कर रहे हैं। आजकल दुनिया की स्थिति ख़राब है और सरकारें प्रजा के साथ न्याय और इंसाफ नहीं दे रही हैं। इस वजह से बहुत से देशों में अशान्ति है। लेकिन हम बहरहाल अपना काम जारी रखेंगे।

* पत्रकार ने Refugee Crisis शरणार्थी संकट के बारे में पूछा कि जमाअत अहमदिया का इस बारे में क्या विचार है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "विभिन्न मुस्लिम देशों की स्थिति इस प्रकार की है कि वहां से लोग बाहर आ रहे हैं। लोग आपके देश से भी गुज़र कर जा रहे हैं। इटली और तुर्की से होते हुए भी जा रहे हैं कुछ अहमदी भी थे और वे ज्यादातर तुर्की आ गए थे और वहां से उन्होंने दूसरे देशों में आगे बढ़ने की कोशिश की।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैं तो हमेशा यही प्रस्ताव देता हूं कि ऐसे पड़ोसी देश जहां शांति है इन रफ्यूजीज़ को संभालें, जैसे अफग़ानिस्तान के रफयूजीज़ पाकिस्तान पहुंचे थे और पाकिस्तान ने उन्हें संभाला और उनके लिए परिसर बनाए थे और फिर बाद में जब हालात बेहतर हो जाएं तो उन्हें अपने देशों को लौटा दें।

इसी पत्रकार महिला ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि: यह जलसा मेरे लिए एक अनूठा अनुभव था। दूसरे मुसलमानों के अधिकांश ज़ोर हदीस या बाद में आने वाले धार्मिक विद्वानों की बातों पर होता है जिसकी वजह से कई बार वह कुरआन शिक्षा के विपरीत व्यवहार कर रहे होते हैं लेकिन जमाअत अहमदिया कुरआन की शिक्षाओं की तरफ लोगों को बुला रही है जिस ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। जमाअत अहमदिया के ख़लीफा के साथ मुलाकात का भी बड़ा असर है। संसार के मुश्किल समस्याओम का हल ख़लीफा बहुत सरल शब्दों में वर्णन कर देते हैं। जलसा की व्यवस्था बहुत अच्छी थी। मुलाकात के दौरान महिलाओं और नौ मुस्लिम महिलाओं से भी मिलन का अवसर मिला जिन के विचारों ने मुझे बहुत अधिक प्रभावित किया कि कैसे हुज़ूर उन के साथ अपनी बेटियों के रूप में व्यवहार करते हैं।

इस वर्ष, मैं अपने काम के कारण लंबे समय तक नहीं रुक पाई लेकिन अगले साल मैं इन दिनों में छुट्टी ले लूंगी, ताकि मैं जलसा सालाना में अधिक समय गुज़ार सकूं।

ग्रीस से एक नए बैअत करने वाले ख़ालिद कापीता नेदस साहिब ने जलसा के बरा में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि

"मुझे पहली बार अपनी बैअत के आयोजन में शामिल होने का अवसर मिला है। इस समारोह के दौरान, मेरा रोंगटे खड़े हो गए। ये क्षण भावनाओं से भरे थे। मुझे गर्व है कि मैं अहमदी मुसलमान हूं।

मुझे जलसा में शामिल हो कर ऐसा लगा कि मैं अपने घर में हूं बल्कि यहां का माहौल मुझे अपने घर से भी अच्छा लगा। मुझे अगले साल के जलसा का बहुत इंतज़ार है।

यूनान प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाकात 7 बजकर 55 मिनट तक जारी रही। इस के बाद प्रतिनिधिमंडल के सभी सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

स्विट्ज़रलैंड के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

इस के बाद स्विट्ज़रलैंड के प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य पाया। स्विट्ज़रलैंड के दो ग़ैर अहमदी भी प्रतिनिधिमंडल में शामिल थे। ये दोनों विवाहित हैं और उनका पैतृक देश तुर्की है और स्विट्ज़रलैंड में रहते हैं। इन का सम्बन्ध अहले कुरआन सम्प्रदाय से है। पति का नाम कैरम एग्यूज़ेल है।

महोदय ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से सवाल किया कि आप को His Holiness कहा जाता। इस का कारण क्या है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "मैंने तो किसी को कभी नहीं बताया है कि मुझे उसे His Holiness कहा जाए। यह तो अहमदियों की अपनी पसंद है कि वे अपने आध्यात्मिक इमाम को किस नाम से पुकारते हैं। मुझे परवाह नहीं है कि कोई मुझे मेरे नाम 'मिर्ज़ा मसूर अहमद' से पुकारता है। लेकिन अहमदी लोग हुज़ूर या His Holiness इत्यादि कहते हैं।

इस पर महोदय ने कहा कि: आपने तो बहुत अच्छा जवाब दिया है। मैं आपके उत्तर से संतुष्ट हूं मुझे आप के बयान सन्तुष्टि हो गई है।

महोदय ने अपनी प्रतिक्रिया वर्णन करते हुए कहा कि: बारिश और मौसम की ख़राबी के बावजूद, जलसा में शामिल होने वाले लोग बहुत खुश नज़र आ रहे थे। जलसा सालाना का प्रबंधन बहुत अच्छा था या तो आप लोगों को नियमित रूप से जलसे आयोजित करके प्रशिक्षण हो गया है, या आप बहुत अच्छी तरह से सुधार कर लेते हैं। हर प्रबंधन की अच्छी गुणवत्ता थी।

प्रतिनिधिमंडल के साथ शामिल मुबल्लिग़ सिलसिला आदरणीय नबील अहमद साहिब ने बताया उल्लेखनीय बात यह है कि यह पति पत्नी अहले कुरआन समुदाय से संबंध रखते हैं और उनके निकट नमाज़ का इतना अधिक महत्त्व नहीं। शनिवार की शाम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात के बाद उनकी पत्नी रिहायश-गाह जाकर आराम करना चाहती थीं लेकिन उनके पति ने उनसे कहा कि मेरी बड़ी इच्छा है कि मैं हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ की इक्तेदा में नमाज़ पढ़कर जाऊँ। तो यह एक बड़ा परिवर्तन था, जो हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात के बाद उन के अन्दर पैदा हुई। स्विट्ज़रलैंड के प्रतिनिधिमंडल की मुलाकात आठ बज कर पांच मिन्ट तक जारी रहेगी। अंत में, मेहमानों को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

यूरोगोए के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाकात

इस के बाद कार्यक्रम के अनुसार 'उरुग्वे' देश से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात की सआदत पाई। उरुग्वे के प्रतिनिधिमंडल में दो सांसद Mr Pablo Daniel श्री पाब्लो डैनियल और Dr Gerardo Amarica डॉ गेरार्डो अमरिका शामिल थे। दोनों का सम्बन्ध देश की राष्ट्रीय जमाअत से है और दोनों पेशे से वकील भी हैं क्या वहां है डॉ गेरार्डोइर साहिब Chamber of Representation के अध्यक्ष भी हैं।

इन दोनों मेहमानों ने कहा कि हम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का धन्यवाद करते हैं कि हमें जलसा में शामिल होने का सौभाग्य दिया गया। यह हमारे लिए एक महान अनुभव था।

उन्होंने कहा कि उन दोनों का ईसाई धर्म से संबंध है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "हमें इस से कोई अन्तर नहीं पड़ता कि कोई कौन से धर्म से सम्बन्ध रखता है। सबसे पहले तो मानवता है और मानवता के अंतर्गत हम कहते हैं कि सभी को इकट्ठा होना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, यहां अस्थायी व्यवस्था थी। मुझे खेद है अगर जलसा के दिन बारिश के कारण आपको कोई परेशानी हो रही है।

इस पर मेहमानों ने कहा कि किसी भी तरह की कोई परेशानी नहीं थी। हम बहुत खुश हैं। सभी व्यवस्थाएं बहुत अच्छी थीं। और हमारा बहुत अच्छी तरह से ध्यान रखा गया था। हमारे लिए हर प्रकार की सुविधा पैदा की गई और हर तरह से सम्मानित किया गया।

संसद के एक सदस्य ने कहा कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का सम्बोधन बहुत अच्छा था। हम इस से बहुत प्रभावित हैं। हम अपनी संसद में धार्मिक आज़ादी को बढ़ावा देंगे। अभी हम विपक्ष में हैं अगली बार सरकार में होंगे। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने मेहरबानी करते हुए फरमाया कि: "जब आप सरकार में होंगे तो हम भी आपके देश में आने की कोशिश करेंगे।"

संसद के एक सदस्य ने कहा कि यहां जलसा में आने से पहले हमें जमाअत अहमदिया के बारे में अधिक पता नहीं था। अब यह ज्ञात है कि आप बहतु महान और शांतिपूर्ण लोग हैं।

* संसद के सदस्य, पाब्लो डैनियल अब्दला श्वार्ज़ ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: "मेरे लिए यह बहुत दिल हिला देने वाला जलसा था जिसमें आपने अपने ईमान और उच्च नैतिक मूल्यों को व्यक्त किया था। विशेष रूप से, इमाम जमाअत अहमदिया का भाषण सुन कर मुझ पर स्पष्ट हो गया कि इस्लाम अपने वास्तविक रूप में केवल शांति का संदेश देता है। मैं जमाअत अहमदिया को प्रचार अभियान और सेवा करने और सैकड़ों देशों में फैलाने के पर बधाई देता हूं।

* संसद के दूसरे सदस्य डॉ गेरार्डो अमरिला साहिब ने अपने विचार व्यक्त करते

हुए कहा: "जलसा सालाना में शामिल होना मेरे लिए एक बहुत ही रोचक अनुभव था।" इस अवसर पर हमने इस्लाम का ऐसा चेहरा देखा जिसे अब तक हम अनदेखा कर रहे थे। यह स्पष्ट हो गया है कि इस्लाम का संदेश शांति, सहिष्णुता, प्रेम का है और गैर-लोगों के लिए भी धार्मिक मतभेदों के है, मैं आपकी मेहमान नवाज़ी और लिए प्यार के कारण मैं बहुत धन्यवादी हों।

उज़्बेज के प्रतिनिधिमंडल के दल के साथ मुलाकात आठ बज कर 15 मिन्ट तक जारी रही। अंत में प्रतिनिधिमंडल के सभी सदस्यों ने पाया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

स्पेन और अर्जेंटीना के दल की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाकात

इस के बाद स्पेन और अर्जेंटीना के प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात की।

* स्पेन से आए एक सांसद ने कहा कि मैं अल्पसंख्यकों की कठिनाइयों को दूर करने की कोशिश करता हूं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, 'अल्लाह तआला आप की मदद करे।

* स्पेन से एक पत्रकार ने सवाल किया कि पिछले दिनों यहां आतंकवाद की घटनाएं हुई हैं कैसे जमाअत अहमदिया इस तरह की घटनाओं की निंदा करती है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा: "हम हमेशा आतंकवाद की निंदा करते हैं और हम केवल निंदा ही नहीं करते हैं, बल्कि यह स्पष्ट है कि यह जो कुछ भी हो रहा है वह इस्लाम के ख़िलाफ है।"

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "मैंने विभिन्न देशों की पार्लियामेंट और विभिन्न आयोजनों और शान्ति समारोहों में अपने भाषणों में न केवल आतंकवाद की घटनाओं की निन्दा की है बल्कि इस्लाम की शांतिपूर्ण शिक्षा के प्रकाश में इस का हल भी बताया है। इसी मैंने दुनिया के विभिन्न नेताओं को पत्र भी लिखे हैं कि हम शांति कैसे स्थापित कर सकते हैं।

* अर्जेंटीना से एक नए अहमदी बुज़ुर्ग आए थे। वह कहने लगे, "मुझे बहुत ख़ुशी है कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने हमारे देश के लिए एक मुबल्लिग़ भिजवा रहे हैं । अब समय आ गया है कि हमारे देश में भी इस्लाम की तबलीग़ हो।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "इसलिए मुबल्लिग़ भिजवा रहा हूं कि इस्लाम की तब्लीग़ वहाँ फैले।

* स्पेन के पूर्व सदस्य बंद संसद Jose Maria Alonso (जूसे मारिया अलोंसो) साहिब ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा: इस जलसा की सबसे महत्त्वपूर्ण बात ख़लीफतुल मसीह का संदेश था जिस में ख़लीफा ने बताया कि अगर मुसलमान दुनिया में बदलाव लेकर आना चाहते हैं तो यदि यह परिवर्तन प्यार, प्रेम और शांति के द्वारा ही आ सकता है। ख़लीफतुल मसीह ने स्पष्ट रूप से कहा था कि कोई किसी को ज़बरदस्ती मुस्लिम नहीं बना सकता। यदि अल्लाह तआला हर किसी को मुस्लिम बनाना चाहता है, तो सभी मानव जाति को मुसलमान ही पैदा करता, इसलिए किसी पर कोई भी ज़बरदस्ती धर्म थोप नहीं सकता।

* पेडरो आबाद स्पेन से सम्बन्ध रखने वाले Daily Cordoba के रिपोर्टर Rafael भी इस प्रतिनिधिमंडल में शामिल थे। उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए और कहा: जलसा सालाना हर दृष्टि से बहुत उपयुक्त था इस अंतरराष्ट्रीय जलसा में हमने स्पष्ट रूप से पाया कि जमाअत अहमदिया की सोच बहुत ही उन्नत है। जमाअत अहमदिया के कारण इस्लाम का असल रुख़ लोगों के सामने आ रहा है जो कि उच्च नैतिक मूल्यों, भाईचारे, और प्रत्येक प्रकार के चरमपंथ के ख़िलाफ जिहाद की शिक्षा पर आधारित है।

* एक अख़बार की रिपोर्टर Maria Del Carmen भी उनके साथ थीं महोदया कहने लगीं कि "मैं पहले भी इस जलसा में शामिल हो चुकी हूं।" इस बार हमने फिर से देखा कि यह जलसा अपने शामिल होने वालों के अन्दर रूहानी उन्नति पैदा करने वाला है। हमें अपने मतभेदों के स्थान पर अपनी अच्छाइयों को देखना चाहिए और इस जलसा में हमें यही बात नज़र आई।

* अर्जेंटीना से आने वाली मेहमान अख़बार की रिपोर्टर (Pablo Pla) पाब्लो प्ला साहिब भी प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा थे। उन्होंने अपनी प्रतिक्रिया का वर्णन करते हुए कहा कि जलसा सालाना शामिल होना बहुत ही अच्छा अद्भुत अनुभव था। इस जलसा के कारण, मुझे पता चला कि अतिवाद, उग्रवाद, महिलाओं और अन्य धर्मों के बारे में अहमदिया जमाअत के विचार क्या हैं।

मुझे यह सुनकर बहुत हैरानी हुई है कि जमाअत अहमदिया लाखों की संख्या में है, और इस साल भी 6 लाख से अधिक लोग जमाअत में शामिल हुए हैं।

ख़लीफतुल मसीह के साथ हमारी मुलाकात भी बहुत अदभुत रही। वह हमारे साथ बहुत प्यार, मुहब्बत और सम्मान से पेश आए। मुझे जमाअत की यह बाद बहुत अच्छी लगी कि प्यार मुहब्बत और धार्मिक समानता इन के बुनियादी सिद्धांत हैं। इस जलसा में शामिल होने के बाद मुझ पर अहमदियों के विचार स्पष्ट हो गए। मैं जमाअत अहमदिया का संदेश फैलाने के लिए आपके साथ हूं। मैं जिस चैनल का प्रतिनिधित्व करता हूं, उसको देखने वालों की संख्या 40 लाख से अधिक है। मैं अपने चैनल पर आप का संदेश दिखाऊंगा।

स्पेन और अर्जेंटीना के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाकात में 8 बजकर 25 मिन्ट तक जारी रही। बाद में, दल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ तस्वीर ख़िंचवाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

आयरलैंड के दल की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाकात

आयरलैंड से आने वाले प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य पाया।

आयरलैंड से छह मेहमानों का दल आया था जिनमें एक सीनेटर Trevor O Lolchartaigh ट्रेवर ओ लोलचार्टघ साहिब, संसद के एक वरिष्ठ सदस्य Mr Emon O Cuive इमॉन ओ क्यूव साहिब और National Diversity Police राष्ट्रीय विविधता पुलिस के प्रमुख Darren Howlett Coventry साहिब डैरेन हॉवेल्ट कोवेन्ट्री शामिल थे।

प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों से परिचय प्राप्त करने के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, एक अस्थायी गांव यहां बनाया गया है। सभी व्यवस्थाएं अस्थायी और सारा काम स्वयंसेवक हैं मुझे खेद है अगर बारिश और मौसम की वजह से आपके आतिथ्य और व्यवस्था में कमी आई हो तो मैं क्षमा चाहता हूं। यह जो अस्थायी व्यवस्था है, यदि आप कुछ दिनों बाद यहां वापस आते हैं, तो आप को इस क्षेत्र में केवल हरे रंग के खेत देखेंगे।

* दल में शामिल एक मेहमान औरत ने कहा कि आयरलैंड के मुबल्लिग़ इब्राहीम नूनन साहिब बहुत नरम दिल व्यक्ति हैं और वह बहुत ही ध्यान रखने वाले हैं ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा, "हमारे मुरब्बियों को इसी प्रकार का होना चाहिए। मानवता के लिए सभी को एक दूसरे का ख्याल रखना चाहिए और एक साथ काम करना चाहिए।

* Darren Howlett Coventry राष्ट्रीय विविधता कार्यालय पुलिस के प्रमुख Diversity Office Police डेरेन हॉवेल्ट कोवेन्ट्री ने जलसा के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: "यह मेरा पहला जलसा सालाना था जलसा के अवसर पर, मुझे जमाअत के दृढ़ निश्चयी, सेवा करने वाले और नेक प्रकृति लोगों के साथ मिलने का अवसर मिला, जिन्होंने " मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं का केवल मौखिक अभिव्यक्ति ही नही की बल्कि इन सभी काम करने वालो की निस्वार्थ सेवाओं के द्वारा इस की अभिव्यक्ति भी की गई ।

इमाम जमाअत अहमदिया के ख़िताब में, न्याय और शांति की स्थापना करने के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयास की नसीहत की गई थी ख़िताब से पहले जो नज़्म पढ़ी गई इस का भी मुझ पर बहुत अ गए थे। इस कविता के पते को पढ़ने से पहले भी मुझ पर बहुत प्रभाव पड़ा है। मैं आपका सुपरमैन हूं कि आपने मुझे इस महान अवसर दिया है, जिसने मुझे इस्लाम पर ध्यान देने और इस्लाम की वार्षिक घटनाओं का आनंद लेने का मौका दिया है।

* मैं आप का धन्यवाद करता हूं कि आप ने मुझे यह अवसर प्रदान किया जिस से मुझे इस्लाम के बार में चिन्तन करने और जलसा सालाना के प्रोग्रामों से लाभान्वित होने का अवसर प्राप्त हुआ।

एक अन्य मेहमान Trevor o clochartaigh) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: "मैं इमाम जमाअत अहमदिया का बहुत आभारी हूं कि उन्होंने मुझे जलसा सालाना में दूसरी बार आमंत्रित किया।" वैसे तो सारा जलसा ही बहुत ज़बरदस्त था लेकिन इस सफर का सबसे अच्छा क्षण इमाम जमाअत इमाम जमाअत अहमदिया के साथ एक मुलाकात थी। ख़लीफुतल मसीह एक महान नेता और बहुत बुद्धिमान व्यक्ति हैं।

* आयरलैंड के एक अन्य मेहमान, Trevor O' Clochartaigh ट्रेवर ओ 'क्लोरिटाइघ, जो कि सीनेटर हैं, ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: "मुझे लगता है कि मैं दुनिया भर से आने वाले अहमदियों के साथ समय बिताने को अपना

सौभाग्य समझता हूं। जिस चीज़ ने मुझे प्रभावित किया वह आपकी मेहमान नवाज़ी का गुण था। जमाअत अहमदिया की यह बात भी मुझे बहुत अच्छी लगी कि वह हर तरह के प्रश्नों को सुनने के लिए तैयार है और किसी भी समस्या से भागती नहीं है, बल्कि सभी प्रकार की समस्याओं का जवाब देती है। यहां पर दुनिया भर से आने वाले विभिन्न धर्मों और जातियों के लोगों के साथ मुलाकात भी बहुत अच्छी रही। एक ही स्थान पर विभिन्न समूहों और धर्मों के लगों का इकट्ठा करना साबित करता है कि जमाअत अहमदिया एकता और समरूपता और एक दूसरे को समझने के लिए प्रत्येक समय तैय्यार रहती है। फिर जलसा व्यवस्था भी बहुत आश्चर्यजनक था। इस जलसा को सफल बनाने के लिए आपने जो कोशिशें की हैं वे वास्तव में आपके धर्म और आप के विशाल हृदय को प्रकट करती हैं।

हुज़ूर अनवर से मुलाकत के बाद महोदय ने कहा कि इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसूर अहमद से मिलने भी मेरे लिए गर्व की बात थी। वह एक विशेष वजूद हैं जिनके व्यक्तित्व का प्रभाव लाखों लोगों पर है।

आयरलैंड से आने वाले शिष्टमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ मुलाकात 8 बज कर 35 मिनट तक जारी रही। मुलाकात के अंत में, प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

हॉलैंड के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाकात

आयरलैण्ड के दल के बाद हॉलैंड से आने वाले मेहमानों ने, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

नीदरलैंड से तीन मेहमान आए थे इन मेहमानों में हालैंड के पूर्व सांसद श्री Mr Harry van Bommel हैरी वान बोमेल साहिब शामिल थे जिन्होंने वर्ष 2015 ई में जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ नीदरलैंड पधारे थे और 6 अक्तूबर को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने हॉलैंड की राष्ट्रीय संसद में अपना ख़िताब प्रस्तुत किया था तो उस समय Mr Harry van Bommel ने इस समारोह की मेज़बानी के कर्तव्यों का आयोजन किया था। महोदय उस समय विदेश मामलों की समिति के अध्यक्ष थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने मेहमानों से परिचय प्राप्त करने के बाद फ़रमाया जलसा के दिनों में बारिश होती रही है और मौसम ठीक नहीं रहा। लेकिन हमने पूरी कोशिश की है कि मेहमानों को कम से कम कष्ट हो। यहां सभी प्रबंध अस्थायी होते हैं अस्थायी कार्यों के अधीन एक शहर स्थापित किया जाता है।

इस पर हैरी वैन बोमेल ने कहा कि सभी व्यवस्थाएं बहुत अच्छी हैं और हमारा बहुत अच्छी तरह से ध्यान रखा गया है। हमें इज़्ज़ दी जा रही है।

* वफद में दो युवा शामिल थे। दोनों ने कहा कि अब हम समझते हैं कि हम बैअत के लिए तैयार हैं। उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया: बैअत तो दिल का निर्णय होता है। जब दिल को पूरी तरह तसल्ली हो तो बैअत करनी चाहिए।

* पूर्व सदस्य एफ़ संसद Mr Harry Van Bommel अपने भाव प्रकट करते हुए कहा: मैंने जलसा में शामिल होकर दुनिया देखी जहां 'मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं' का व्यावहारिक प्रदर्शन था। यह जमाअत दान और मानवाधिकार के लिए सारी दुनिया में काम कर रही है, भूतपूर्व में संसदीय समिति हॉलैंड ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की मेज़बानी का सम्मान प्राप्त किया था। भविष्य में भी हम पाकिस्तान, अफ़्रीका और दुनिया के अन्य देशों में स्वतंत्रता, विवेक, बन्दों के अधिकार और लोकतांत्रिक संघर्ष के लिए जमाअत अहमदिया के साथ मिलकर काम करेंगे।

महोदय ने हदीकतुल महदी में घुसते हुए भारी बारिश के दौरान स्वयंसेवी ख़ुद्दाम को सेवा करते देख कर कहा कि मैं 16 साल की उम्र से राजनीति में हूं और मैं इस स्थिति तक पहुंचने के लिए विभिन्न मीटिंगों और सम्मेलनों का आयोजन कर रहा हूं और विभिन्न सम्मेलनों में भी शामिल होता रहा हूं। लेकिन जमाअत अहमदिया के इस माहौल को देखते हुए मुझे बहुत कुछ सीखने का मौका मिला है। मैंने जमाअत अहमदिया की स्वैच्छिक सेवा की बात सुनी, लेकिन मैंने व्यक्तिगत रूप से पहली बार देख रहा था। रास्ते में कुछ वाहन कीचड़ में फंस गए थे और स्वयंसेवकों ने उन्हें कीचड़ से बाहर कर दिया था। जब उनकी कार फंस गई तो उन्होंने कहा कि मुझे विश्वास है कि मैं इस फंसने की वजह से निकलकर अपने सूट बूट या कपड़े खराब नहीं करने पड़ेंगे बल्कि ख़ुद्दाम मदद देंगे और ऐसा ही हुआ कि पांच या छह ख़ुद्दाम हमारी गाड़ी की तरफ लपके और उन्होंने 10 मिनट के प्रयास के बाद कार को कीचड़ से निकाल लिया। इस बीच, उनके चेहरों पर भी गाड़ी के टायरों के घूमने के कारण छींटे पड़े। यह देखकर महोदय कहने लगे कि आपकी जमाअत के लोग केवल आतिथ्य में ही सबसे आगे नहीं बल्कि अपने मेहमानों का हर तरह से ध्यान रखते हैं और यह बात दुनिया के किसी और संगठन में देखने को नहीं मिलती।

* हॉलैंड के एक अन्य मेहमान Mr Arnaud Van Doorn आर्थर वान डोरन साहिब ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि, 'जलसा का वातावरण बहुत मित्रता पूर्वक था।' मैं इस आयोजन से मैंने बहुत कुछ सीखा है। इस अवसर पर, मैंने लोगों के साथ यादगारी मीटिंग की हैं। वातावरण एक सकारात्मक संदेश की सुगंध था। युवाओं की पूर्ण भागीदारी और निस्वार्थ सेवा ने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया। युवाओं को काम करता देखकर मुझे में एक नई आशा पैदा हुई है। मैंने कई मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम आयोजनों में हिस्सा लिया है, लेकिन इस तरह की युवा भागीदारी मेरी पहला अनुभव है।

हॉलैंड के प्रतिनिधिमंडल की यह मुलाकात आठ बज कर 45 मिनट तक जारी रही। मुलाकात के अंत में, प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

सिएरा लियोन के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाकात

इस के बाद सिएरा लियोन से आने वाली एक मेहमान Haja Hawa Bangura साहिबा ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य पाया।

महोदया सिएरा लियोन के अगले राष्ट्रपति चुनाव में अध्यक्ष के उम्मीदवार हैं और पहले सरकार में मंत्री पद पर रह चुकी हैं। साथ ही सिएरा लियोन की तरफ से संयुक्त राष्ट्र की सदस्य भी रही हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "आप को किसी प्रकार का कोई कष्ट तो नहीं पहुंचा

इस पर महोदया ने कहा कि मेरा सभी तरीकों से ध्यान रखा गया है और मुझे बहुत सम्मान मिला है। जलसा की व्यवस्था बहुत व्यवस्थित आधार पर थी और हर काम एक अच्छे तरीके से किया जा रहा था। मैंने देखा है कि छोटे बड़े सभी सेवा पर मामूर थे। इस प्रकार की प्रणाली मैंने अपने जीवन में कहीं नहीं देखी ।

यह मुलाकात आठ बजकर 50 मिनट तक चली और मुलाकात के अंत में महोदया ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई।

मेहमानों के सम्मान में रात्रिभोज

* आज कार्यक्रम के अनुसार विभाग आरक्षित 1 में वकालत तबशीर के अधीन विभिन्न देशों से आने वाले मेहमानों के सम्मान में रात्रिभोज का आयोजन किया गया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए पधारे।

इस आयोजन में सम्मिलित होने वाले मंत्रियों, सांसद, विभिन्न देशों के सरकारी विभागों में काम करने वाले अग्रणी लोग, विभिन्न देशों की एम्बसीज़ के प्रतिनिधि, पैरामाउंट चीफस, न्यायाधीश, वरिष्ठ वकील, विभिन्न देशों के राष्ट्रीय मीडिया और प्रेस से संबंधित प्रतिनिधि, विभिन्न संगठनों और सोसायटियों और संस्थाओं के प्रमुख, विश्वविद्यालय कॉलेजों के प्रिंसपल्स, उप चांसिलरज़, प्रोफेसर सज्जनों, कादियान और रबवा से आने वाले केंद्रीय प्रतिनिधि, अरब देशों, इंडोनेशिया, रूस और अन्य देशों से आने वाले केंद्रीय प्रतिनिधि, मुबल्लिग़ किराम, वाकफ़ीन ज़िन्दगी और जलसा के प्रशासन और विभिन्न विभागों से संबंधित सम्मान्नीय मेहमान शामिल थे।

लगभग 9 बजकर 25 मिनट पर इस समारोह के अंत में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ जलसा गाह के मर्दाना हॉल में पधारे और नमाज़ मग़रिब और ईशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ के बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरहिल अज़ीज़ अपने निवास में आए ।

30 जुलाई, 2017

आज जलसा का तीसरा और अंतिम दिन था। सुबह के अधिवेशन के बाद आलमी बैअत के प्रोग्राम था। विभिन्न देशों से आने वाले ग़ैर जमाअत और गैर मुस्लिम मेहमान जहां आलमी बैअत का नज़ारा देखते हैं वहाँ कुछ बैअत के समारोह में भी शामिल होते हैं और कुछ उनमें से नियमित बैअत करके अहमदियत में शामिल

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 5-12 April 2018 Issue No. 14-15

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

हो जाते हैं।

आलमी बैअत

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ एक बज कर दस मिन्ट पर जलसा गाह में पधारे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कोट पहना हुआ था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के आने से पहले ही स्टेज के सामने ग्रीन क्षेत्र में विभिन्न देशों से आने वाले जमाअत के प्रतिनिधि, केंद्र कादियान, केंद्र रबवा से आने वाले प्रतिनिधियों और विभिन्न जातियों से संबंधित नए अहमदी एक लाईन में पंक्तियों में बैठे हुए थे।

बैअत लेने से पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इस साल होने वाली बैअतों की घोषणा करते हुए फरमाया कि 'इस साल अल्लाह तआला की कृपा से 124 देशों से 257 क़ौमों से संबंध रखने वाले 6 लाख 9 हज़ार 556 लोगों ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद पैगंबर की सच्चाई को स्वीकार करने की तौफीक पाई । बैअत के समय निम्नलिखित मित्रों को हुज़ूर अनवर के मुबारक हाथ पर हाथ रखने की सआदत हासिल हुई:

(1)आदरणीय फज़ुलर्रहमान साहिब नाज़िर अमूरे आम्मा भारत (प्रतिनिधि केंद्र, कादियान)

(2)आदरणीय सालिक अहमद साहिब, सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया पाकिस्तान (प्रतिनिधि केंद्र, रबवा)

(3)आदरणीय अब्दुर्रहीम जलाल साहिब अफ्रीकी अमेरिकन (प्रतिनिधि महाद्वीप अमेरिका)

(4)आदरणीय मोहम्मद अली कॉयरे साहिब अमीर जमाअत यूगांडा (प्रतिनिधि महाद्वीप अफ्रीका)

(5)आदरणीय इब्राहीम इखल्फ़ साहिब सचिव तब्लीग़ यू.के (प्रतिनिधि यूरोप और अरब देशो)

(6)(माओरी अहमदी)आदरणीय मैथ्यू अबू साहिब (Mathew Abu Bakr Howell) (प्रतिनिधि महाद्वीप ऑस्ट्रेलिया और द्वीप देशों)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ बैअत के शब्द पढ़ते और सभी जलसा में शमिल और दुनिया भर के अहमदी एम.टी. ए अंतरराष्ट्रीय के माध्यम से लाइव इस मुबारक समारोह में शामिल होते हुए अपनी अपनी मस्जिदों, सेनटरज़ और घरों में हुज़ूर अनवर के अनुसरण में ये शब्द दोहराते रहे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पहले अरबी पाठ के बाद अंग्रेजी में बैअत का वादा दोहराया और विभिन्न भाषाओं के अनुवादक साथ में अनुवाद करते रहे जबकि दूसरे चरण में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने केवल उर्दू में बैअत के वादा दोहरा कर बैअत ली।

आलमी बैअत के बाद सभी मित्रों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की इक्तेदा में अपने मौला करीम समक्ष शुक्र का सिज्दा अदा किया और इस तरह यह समारोह अपने अंत को पहुंचा।

आलमी बैअत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मंच पर तशरीफ़ ले गए जहां नमाज़ ज़ोहर व अस्र जमा करके पढ़ाई गई और नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रहायश गाह पधारे।

आलमी बैअत के विषय में मेहमानों की प्रतिक्रियाएं

इस समारोह में सीधे शामिल होने वालों के अलावा बहुत से जमाअत के बाहर के मेहमानों की एक बड़ी संख्या ने यह नज़ारा देखा और उसके विषय में अपने विचार प्रकट। इसी प्रकार, कुछ नए अहमदियों ने अपनी भावनाओं और प्रतिक्रियाएं का उल्लेख किया। उनमें से कुछ प्रतिक्रियाएं निम्नलिखित हैं;

* एक मैक्सिकन नई बैअत करने वाली महिला Rosalina Lara Flota साहिबा कहती हैं आलमी बैअत के दौरान ऐसा लगा कि हर शब्द दोहराते हुए अल्लाह तआला से दोबारा बैअत का पालन करने का वादा क्या है, और बैअत के द्वारा मेरे ईमान को बहुत मज़बूती मिली। मुझे गर्व है कि मैं जमाअत अहमदिया का हिस्सा हूं और यह जमाअत सारी दुनिया की बेहतरी के लिए शिक्षा प्रस्तुत करता है और विभिन्न तरीकों से मानवता की मदद करती है। मुझे जलसा सालना के दौरान इस्लाम और जमाअत के बारे में कई चीज़ें सीखने को मिलीं।

* तुर्कमेनिस्तान के एक दोस्त अब्दुल रशीद साहिब जलसा में शामिल हुए। उन्होंने बैअत के हवाले से अपने भाव को प्रकट करते हुए कहा जिस समय बैअत कर रहा था मेरी आंखों से आंसू जारी थे और वे आँसू हैं जो मेरे पिता की मृत्यु पर भी न निकल पाए। यह आंसू ज़ाहिर में लगता था कि शायद बिना किसी कारण के हैं लेकिन बाद में मुझे समझ आया कि पृथ्वी पर अब एक ऐसी उम्मीद पैदा हो गई है और लाखों लोगों की एक ऐसी जमाअत पैदा हो गई है जो अपनी ज़ात में बेनज़ीर है और यह जमाअत अपने कर्म से प्रत्येक कठिनाई और आपदा को दुनिया से दूर कर के हर बलिदान देने के लिए तैयार है।

* इसी प्रकार क्रोएशियाई संसद के सदस्य Mr Hajdukovic Domangoj हजदुकुविक डोमांज भी जलसा में शामिल हुए। उन्होंने वैश्विक बैअत का हवाला देते हुए कहा: वैश्विक बैअत समारोह ने मुझे बहुत प्रभावित किया है ईसाई धर्म की Faith Reconfirmation समारोह में कई बार शामिल हुआ हूं लेकिन जो भावनाएं, ईमानदारी और धर्म के प्रति वफादारी की प्रतिबद्धता जमाअत अहमदिया की वैश्विक बैअत में देखी है वह एक अजीब-गरीब और अद्‌भुत अनुभव था जिसे मैं सारी उम्र याद रखूंगा।

* डॉ हानी रिशवान का मिस्र से सम्बन्ध है और अरबी और प्राचीन मिस्र की भाषाओं के माहिर हैं। वह भी जलसा में शामिल हुए। महोदय वैश्विक बैअत के समय में जलसा गाह में दाख़िल हुए। लोगों की लाइनें जो जलसा गाह में दूर दूर तक फैली हुई थीं देख कर बहुत ही हैरान हुए।

उन्होंने कहा कि हमारे देश मिस्र में इस प्रकार का प्रबन्ध असंभव है वह भावनाओं से इतना भर गए कि बैअत के समय एक पंक्ति में शामिल हो गए और हुज़ूर के पीछे इस्तिग़फार के अरबी शब्द को दोहराने लग गए।

* जलसा में शामिल एक महिला पत्रकार आलमी बैअत के अवसर पर बैअत के शब्द साथ साथ दोहराने लग गईं। बाद में पूछने पर महोदया ने बताया:

मुझे नहीं पता कि उस समय मुझे क्या हो गया था लेकिन मेरे जीवन में इस तरह की भावनाएं पहले कभी नहीं आई थीं और मैं अपने आप यह शब्द दोहराती चली गई। पहले मैं समझती थी कि इस तरह की घटनाओं में भावनाओं को उभारने के लिए 'Music' होना चाहिए लेकिन अब मुझे पता चला कि आलमी बैअत के दौरान यह भावना तो अहमदियों के दिल से सीधे निकल रही थी और किसी प्रकार के संगीत की ज़रूरत न थी।

* Edward Goodall एडवर्ड गुडॉल साहिब यहां एक पागलों के अस्पताल में एक मनोचिकित्सक हैं। आलमी बैअत से बहुत प्रभावित हुए उन्होंने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा, "मैंने पहले दस बैअत की शर्तों को दोहराया और फिर सोचा कि मेरे लिए बैअत अब अनिवार्य है। बैअत में शामिल होकर मैं नियमित रूप से रूहानी रूप से अपने आप को दूसरों के साथ संलग्न महसूस कर रहा था बहरहाल यह एक दिल को छूने वाला अनुभव था।

आज भी कार्यक्रम के अनुसार, जलसा के समापन समारोह के बाद शाम को प्रतिनिधिमंडलों की मुलाकात थी। आठ देशों के प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। ये मुलाकातें में हदीकतुल महदी में हुईं।

मुलाकातों से पहले, विभिन्न विभागों को हुज़ूर अनवर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीरें बनाने का अवसर मिला। इन क्षेत्रों में हीयूमेन्टी फर्सट पाकिस्तान, सदरान ख़ुद्दामुल अहमदिया , सदरान अंसारुल्लाह, अहमदिया आर्किटेक्ट्स एंड इंजीनियर्स एसोसिएशन, अलइस्लाम वेबसाइट टीम और नॉर्वे स्कैनिंग की टीम शामिल थी।

इन तस्वीरों के बाद प्रोग्राम के अनुसार मुलाकात सात बज कर से पचास मिनट पर प्रतिनिधिमंडलों की मुलाकात का क्रम शुरू हुआ।

(शेष...................)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad